चैतन्य लहरी

हिन्दी आवृत्ति

खण्ड VI अंक 1 व 2 1994

जिस प्रसन्नता का अनुभव आप सभी तक करते हैं उसका स्त्रोत अहँ या बन्धन हैं। यह प्रसन्नता अस्थायी है। स्थायी आनन्द आत्मा से मिलता है।

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी

सम्पादक : श्री योगी महाजन

मुद्रक एवं प्रकाशक : श्री विजय लाल गिरकर
162, मुनिरका विहार,
नई दिल्ली-110067

मुद्रित : प्रिन्टेक फोटोटाईपसैटर्स,
35, राजेन्द्र नगर मार्केट,
नई दिल्ली-110060.
फोन : 5710529, 5784866

चैतन्य लहरी

प्रिय सहजयोगी,

चैतन्य लहरी नव वर्ष में आपके लिए मंगल कामना करती है।

वर्ष 1994 का आरम्भ एक नये आयाम के साथ हुआ है जिसमें सहजयोग महायोग बन गया है। सहजयोगी अब बसन्त का आनन्द ले रहे हैं। यह आनन्द-प्राप्ति सामूहिक बन गयी है। सारे अवरोध समाप्त हो गए हैं। उत्तरी भारत में हुए जन-कार्यक्रमों में लोगों को स्वतः ही आत्म साक्षात्कार प्राप्त हुआ। श्री माता जी ने उन्हें हाथ अपनी ओर फैलाने भर को कहा और लो! शीतल लहरियां बहने लगीं। हमारी पूज्य श्री माता जी के इस चमत्कार ने सभी सहजयोगियों को अभिभूत कर दिया।

नव वर्ष में घटित होने वाली महान घटनाओं के लिए यह हमारी तैयारी है। चैतन्य लहरी विश्व भर में हुए श्री माता जी के चमत्कारों, रहस्योद्घाटनों तथा घटनाओं की पूरी सूचना देती है। अतः अपना वार्षिक शुल्क, 250/- रुपये, निम्न पते पर भेजना न भूलें :–

श्री एम. डी. वासुदेवा
सहजयोग मन्दिर
17 सी इन्स्टीच्यूशनल एरिया,
(कुतुब होटल के पीछे)
नई दिल्ली

जय श्री माता जी।

चैतन्य लहरी

चैतन्य लहरी खण्ड VI, अंक 1 व 2

विषय सूची

	पृष्ठ
1. देवी स्तुति	1
2. नवरात्रि पूजा	2
3. दिवाली पूजा – रूस	8
4. श्रीकृष्ण पूजा, इटली 15 अगस्त 1993	11
5. श्रीगणेश पूजा, इटली 19 सितम्बर 1993	16
6. रूस में सम्वाददाताओं से साक्षात्कार (सारांश)	20

देवी स्तुति

देवि! प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद,
प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य।
प्रसीद विश्वेश्वरि! पाहि विश्वं,
त्वमीश्वरी देवि! चराऽचरस्य।।

शरणागत की पीड़ा दूर करने वाली देवि! हम पर प्रसन्न होइए। सम्पूर्ण जगत की माता! प्रसन्न होइए। विश्वेश्वरी विश्व की रक्षा करो। देवि! तुम्हीं चराचर जगत की अधीश्वरी हो।

आधारभूता जगतस्त्वमेका
महीस्वरूपेण यतः स्थितासि।
अपां स्वरूपस्थितया त्वयैत–
दाप्यायते कृत्स्नमलङ्घ्यवीर्ये!

तुम इस जगत का एकमात्र आधार हो, क्योंकि पृथ्वी रूप में तुम्ही स्थित हो। देवि! तुम्हारा पराक्रम अतुलनीय है। तुम्हीं जल रूप में स्थित होकर सम्पूर्ण जगत को तृप्त करती हो।

सर्वस्य बुद्धिरूपेण जनस्य हृदि संस्थिते।
स्वार्गापवर्गदे देवि नारायणि! नमोऽस्तु ते।।

बुद्धि रूप से सब लोगों के हृदय में विराजमान रहने वाली तथा स्वर्ग एवं मोक्ष प्रदान करने वाली देवि नारायणी! तुम्हें नमस्कार है।

सृष्टि-स्थिति-विनाशानां शक्तिभूते सनातनि!।
गुणाश्रये गुणमये नारायणि नमोऽस्तु ते।।

तुम सृष्टि पालन और संहार की शक्ति भूता, संनातनी देवी, गुणों का आधार तथा सर्वगुणमयी हो। नारायणी! तुम्हें नमस्कार है।

मेघे सरस्वति वरे भूति बाभ्रवि तामसि।
नियते त्वं प्रसीदेशे नारायणि! नमोऽस्तु ते।।

मेघा, सरस्वती, वरा (श्रेष्ठा), भूति (एश्वर्यरूपा), बाभ्रवि (भूरे रंग की अथवा पार्वती), तामसी (महाकाली), नियता (संयम परायणा) तथा ईशा (सबकी अधीश्वरी), रूपिणी नारायणि! तुम्हें नमस्कार है।

सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि! दुर्गे देवि! नमोऽस्तु ते।।

सर्वस्वरूप, सर्वेश्वरी तथा सब प्रकार की शक्तियों से सम्पन्न दिव्यरूपा दुर्गे देवी! सब भयों से हमारी रक्षा करो! तुम्हें नमस्कार है।

रोगानशेषानपहंसि तुष्टा,
रूष्टा तु कामान् सकलानभीष्टान्।
त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां
त्वामाश्रिता ह्यश्रयतां प्रयान्ति।।

देवी! तुम प्रसन्न होने पर सब रोगों को नष्ट कर देती हो और कुपित होने पर मनोवांछित सभी कामनाओं का नाश कर देती हो। जो लोग तुम्हारी शरण में जा चुके हैं उन पर विपत्ति तो आती ही नहीं। तुम्हारी शरण में गये हुए मनुष्य दूसरों को शरण देने वाले हो जाते हैं।

प्रणतानां प्रसीद त्वं देवि! विश्वार्तिहारिणि!।
त्रैलोक्यवासिनीमीड्ये लोकानां वरदा भव।।

विश्व की पीड़ा दूर करने वाली देवी हम तुम्हारे चरणों पर पड़े हुए हैं, हम पर प्रसन्न होइए। त्रिलोक निवासियों की पूजनीया परमेश्वरी सब लोगों को बरदान दो।

(देवी महात्मय में शुंभ निशुंभ के वध के उपरान्त देवी देवताओं द्वारा की गई नारायणि स्तुति से उद्धृत)

नवरात्रि पूजा

24, अक्तूबर 1993

देवी के बहुत से रूप हैं परन्तु वह शक्ति की अवतार हैं। आदि शक्ति इन सभी अवतरणों को शक्ति प्रदान करती है अतः बहुत सी देवियां है। समय-समय पर पृथ्वी पर अवतरित होकर इन्होंने साधकों के उत्थान के लिए सभी आवश्यक कार्य किए। विशेषतौर पर हमारी परिचित जगदम्बा, दुर्गा मां ने। वे सभी सत्य साधकों की रक्षा तथा राक्षसी शक्तियों का नाश करने का प्रयत्न कर रही थीं। उत्थान के बिना मानव सत्य को नहीं जानता, इसी कारण जो भी कुछ वह करने का प्रयत्न करता है वह मात्र मानसिक प्रक्षेपण (दिमागी जमा-खर्च) ही होता है। सत्य एवं धर्म से प्रमाणित हुए बिना इस मानसिक प्रक्षेपण का पतन हो जाता है। संस्कृत में इसे "ग्लानि" कहते हैं। जब-जब धर्म की ग्लानि होती है तो समस्या का समाधान करने के लिए अवतरण जन्म लेते हैं।

देवी के सभी अवतरणों के समय बहुत सी आसुरी शक्तियां भी पृथ्वी पर अवतरित हुई और देवी को युद्ध करके उनका विनाश करना पड़ा। यह विनाश केवल इसलिए नहीं था कि आसुरी शक्तियों को समाप्त करना है। यह इसलिए था क्योंकि यह शक्तियां साधकों एवं सन्तों का दमन करने तथा उन्हें हानि पहुँचाने का प्रयत्न करती हैं। यह सभी विध्वंसकारी शक्तियां एक ही समय पर नहीं आतीं। जिज्ञासु अध्यात्मिकता के क्षेत्र में अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं और उन्हीं की रक्षा के लिए अवतरण साकार रूप में जन्म लेते हैं। यदि वे सत्य की खोज नहीं करते तो वे भी व्यर्थ जीव हैं जो समाप्त हो जाएंगे। उनकी न कोई गरिमा है न मूल्य। उन्हें किसी बात की समझ नहीं।

देवी प्रेम की दृष्टि में केवल दो प्रकार के लोग होते हैं। एक तो जो सत्य साधक होते हैं तथा दूसरे जो नहीं होते। हो सकता है कि वे अच्छे लोग हों, अच्छा सामाजिक या प्रचार कार्य कर रहे हों। परन्तु यदि वह सत्य की खोज नहीं कर रहे तो ये वे लोग नहीं हैं जिनके लिए परमात्मा को अवतरित होना पड़ता है। अतः साधकों का महत्व तथा उनका मूल्य समझने का प्रयत्न कीजिए। आप भी यही सत्य खोज रहे हैं। सत्य साधकों की प्रतिशतता यदि आप देखें तो यह बहुत कम है, परन्तु है अत्यन्त महत्वपूर्ण। क्योंकि थोड़ा सा सोना टनों लोहे से कहीं अधिक बहुमूल्य होता है। इसी प्रकार अध्यात्मिकता के विकास में एक साधक अमूल्य है।

पूरे ब्रह्माण्ड की रचना की गई, सारा वातावरण बनाया गया, सारा विकास हुआ, किस लिए? कि मानव सत्य को जान लें। परन्तु आधुनिक वातावरण बहुत बड़ा अभिशाप है, शुम्भ-निशुम्भ आदि से भी बड़ा। भौतिकता सबसे बुरी है क्योंकि यह आपको स्थूल कर देती है। साधना में जब आपका उत्थान हो रहा होता है तब सूक्ष्म रूप से भौतिकता आपको पकड़ लेती है। सहजयोग में आकर लोग अपने अन्तस की गहराइयों में चले जाते हैं तथा सारे अन्तर्ज्ञान को, आत्मज्ञान को वे पा लेना चाहते हैं। अन्तर्ज्ञान के दो अर्थ हैं: आत्मा का ज्ञान तथा अपने विषय में ज्ञान।

इसी अवस्था को पाने के लिए लोग सब कुछ करते रहे हैं: हिमालय जाना, वस्त्रहीन शरीर से ठंड में ध्यान करना, थोड़े से फल आदि खा कर कन्द्राओं में रहना आदि। उनकी साधना इतनी गहन तथा आवश्यक थी कि वे सभी प्रकार की तपस्या करते थे पर साधना की शक्ति से बाहर न निकलते थे। पर आजकल भौतिकता उस तीव्र इच्छा तथा समर्पण को पीछे धकेल देती है। सहज में आने से पूर्व साधक पर साधना का पागलपन सवार होता है। वे बहुत धन व्यय करते हैं, बहुत स्थानों पर जाते हैं, हिमालय, नेपाल, जापान आदि जाते हैं। परन्तु आत्म चेतना के विकास के लिए आत्मा बन जाने के उपरान्त उनकी उन्नति रुक जाती है। व्यक्ति को समझना चाहिए कि इतनी दौड़-धूप के बाद उसे इतनी अमूल्य उपलब्धि प्राप्त हुई है अतः आपको इसमें स्थिर होना है। पर आप तो इससे अत्यन्त सन्तुष्ट हो जाते हैं। यहां तक भी ठीक है यदि आपकी उन्नति न रुके। आपका विकास रुक जाता है और इसका एक कारण है भौतिकता की ओर झुकाव। इसी भौतिकता के कारण ही आप में आत्मविकास की कमी है।

जैसे आप जानते हैं कि देवताओं की प्रार्थना पर देवी

अवतरित हुईं और आसुरी वृत्तियों का नाश किया। देवताओं की गहन इच्छा के फलस्वरूप ही देवी अवतरित हुईं। उत्थान की इच्छा उनमें इतनी तीव्र थी कि भूखे प्यासे रह कर भी वे उत्थान के लिए कार्य करते। पर इन आसुरी शक्तियों ने इनके मार्ग में बाधा डाली। इतने हृदय से उन्होंने देवी को पुकारा कि उनकी रक्षा तथा देखभाल के लिए उन्हें पृथ्वी पर अवतरित होना ही पड़ा। पर हमें लगता है कि जरा सी उपलब्धि पाते ही आप आत्मसन्तुष्ट हो जाते हैं। आत्म-सन्तोष का अर्थ आपकी दृष्टि में क्या है?

आत्म साक्षात्कार के पश्चात यदि आप पूर्ण हैं, पूर्णत्वं में हैं, सत्य से आपकी पूर्ण एकाकरिता है तो करने को कुछ शेष नहीं, आप सन्त बन गए हैं। सन्त को ख्याति की आवश्यकता नहीं होती, किसी चीज़ की आवश्यकता नहीं होती। उसका सन्देश फैल जाता है। लोग उसे देखते ही जान जाते हैं कि वह महान सन्त है। बहुत से सन्त अपने घर तक को भी नहीं छोड़ते। भारत में एक कहावत है कि अपने तकिए को नहीं छोड़ना चाहिए। गुरू का यही माप-दण्ड था। साधक छः सात मील पहाड़ चढ़ कर गुरू के पास आऐ। पर गुरु किसी से नहीं मिलते, आपको चांटा भी मार सकते हैं, किसी भी प्रकार से आपकी परीक्षा ले सकते हैं। अन्त में वे किसी एक को आत्म साक्षात्कार के लिए चुनते। यह उत्कण्ठा तथा घोर-प्रयत्न साधकों में सदा होता था।

अब हम आज के सहजयोग पर आते हैं। आप जानते हैं कि आपको आत्म साक्षात्कार मिल गया है, आप अन्य लोगों से कहीं अच्छे हैं, बहुत सी समस्याओं से आपको छुटकारा मिल गया है तथा आप अपने गुरू बन गए हैं। फिर भी अपने तथा अन्य लोगों के प्रति आपका उत्तरदायित्व कम हो गया है क्योंकि आप आत्म-सन्तुष्ट हैं।

उस दिन एक सहजयोगिनी ने मुझे फोन करके कहा कि मैं डाक्टर के पास गई और उसने बताया कि मैं गर्भवती हूँ। मैं इस बच्चे का क्या करूँ? इतनी छोटी-छोटी बातें मुझसे पूछते हैं। इनके बच्चों के नाम भी मुझे बताने पड़ते हैं। किसी पादरी से भी कहीं अधिक कार्य मुझे करना पड़ता है। लोग छोटी छोटी चीज़ों से चिन्तित हैं। उनकी गाड़ी छूट जाए तो भी मुझे फोन करते हैं। क्या किया जाय? उन्हें बताना पड़ता है कि बन्धन दे दो। उनके माता पिता पर भी मुझे चित्त देना पड़ता है। बड़ी ही तुच्छ चीज़ों के लिए मुझे पत्र लिखते हैं। लोगों की समझ में नहीं आता कि मैं यहां किसलिए हूँ। फिर भी मैंने कभी नहीं कहा कि इतनी व्यर्थ की बातों के लिए मेरा समय बर्बाद करते रहते हो। पर अब ध्यान रखना है कि आत्म साक्षात्कारियों के रूप में यदि आप अपना मूल्य नहीं समझते तो आप मेरे समय का तथा मेरा भी मूल्य नहीं समझ सकते।

आपके इस भौतिक दृष्टिकोण के कारण यह अवतरण भी व्यर्थ हो सकता है। मेरी समझ में नहीं आता कि आजकल लोगों को क्या हो गया है। आपके जीवन का सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य तो उत्थान द्वारा विकसित होना है। सारी चीज़ को गहनता से देखें। इस ब्रह्माण्ड की रचना क्यों कि गई? आप को मानव क्यों बनाया गया? यह सब करने की क्या आवश्यकता थी? विशाल दृष्टि डाल कर अपनी स्थिति का अन्दाजा लगाएं कि मैं कहां हूँ? किस प्रकार परमात्मा ने मुझे चुना है और अब मैं सहजयोगी हूँ। अब मेरा क्या उत्तरदायित्व है? व्यक्ति को यह देखना है। परन्तु इसके विपरीत मैंने देखा है कि लोग मूर्खतापूर्ण तुच्छ बातों के लिए फोन करते हैं। यह समझ पाना असम्भव है कि कैसे सहजयोगी ये बातें पूछ सकते हैं?

इस परिप्रेक्ष्य में हम देवी को देख सकते हैं। सत्य साधकों की रक्षा करने के लिए तथा उनका उत्थान मार्ग प्रशस्त करने के लिए देवी समय समय पर भिन्न रूप धारण करके पृथ्वी पर अवतरित होती हैं। क्या आप कल्पना कर सकते हैं? कलयुग से पूर्व की देवी के अवतरणों में यह बहुत बड़ा अन्तर है। तो अब ये कोई भिन्न बात क्यों हैं कि आप पृथ्वी पर सहजयोगी बनने के लिए आए। आपका एक शरीर है, मस्तिष्क है, भावनाएं हैं जो आध्यात्मिक से प्रचलित है। बीते जीवन में वर्षों तक आप परमात्मा को खोजते रहे। तब आप यहां आये, क्या यह मात्र संयोग था? तो यह क्या था? अपनी साधना के फलस्वरूप, सौभाग्य से जब आप सहजयोग में आये हैं और इसमें आनन्द पाया है तो अब आपका क्या उत्तरदायित्व है?

यह अवतरण पृथ्वी पर स्वयमेव मात्र आपकी रक्षा और पोषण करने के लिए तथा राक्षसों का नाश करने के लिए नहीं आया। आपके अन्दर निहित सूक्ष्मताओं के तथा आपके आन्तरिक एवं बाह्य सम्बन्धों के बारे में आपके बताने के लिए वे पृथ्वी पर अवतरित हुई हैं। आप कभी भी सत्य, सर्वव्यापक शक्ति तथा सर्वशक्तिमान परमात्मा से जुड़े न थे। व्यक्ति को समझना चाहिए कि कितनी महान घटना घटित हुई है कि मेरे अन्दर से निकल कर कुण्डलिनी ने सारे ऊपरी चक्रों को छू लिया है! कैसे? इससे पूर्व यह कभी नहीं घटित हुआ। साधकों की मात्र रक्षा तथा देखभाल हुई। कहीं भी ऐसा वर्णन नहीं है कि देवी ने लोगों को

आत्मसाक्षात्कार दिया। वे जिम्मेदार हैं, दे सकती हैं। उनके एक नहीं दस नाम ऐसे हैं कि वे निर्वाण प्रदायनी हैं, मुक्ति दायिनी हैं तथा पुनर्जन्म से आपको परिचित कराती हैं। यह सब लिखा हुआ है। पर आधुनिक युग में तो लोग अपने जीवन के मूल्य को समझ ही नहीं पा रहे हैं।

देखिए किस प्रकार लोग प्रश्न करते हैं, पूछताछ करते हैं, चिन्तित हैं, मेरा बच्चा बड़ा हो गया है, मैं क्या करूं? बच्चा बड़ा हो गया है तो इसे स्कूल भेज दो या जो अच्छा लगे करो। माँ क्या आप बताएंगी कि इसे कहां भेजूं? क्या आपने स्कूल देखा है श्रीमाताजी? नहीं मैंने नहीं देखा। तो अब मैं जाकर स्कूल का निरीक्षण करूं। काली माता की यह सब कार्य करते हुए कल्पना कीजिए। पर मुझे इतने तुच्छ कार्य भी करने पड़ते हैं जो आप अपने बच्चे के लिए भी नहीं करेंगी। और बच्चे क्या कर रहे हैं? अभी तक भौतिकता में फंसे हैं।

आज दशहरे का विशेष दिन है। इस दिन रावण को जलाया गया था। जगह जगह रावण के पुतले जलाये गए। यह श्री राम की विजय है। ऐसा नहीं है कि उन्होंने सहजयोगी बनाए या आत्म साक्षात्कार दिया। नहीं। उनकी विजय यही थी कि उन्होंने रावण का वध किया। आज की तैयारी के लिए उस समय वह कार्य हुआ, आज की घटनाओं के लिए। बहुत समय पूर्व ऐसा हुआ ताकि आजकल के लोग श्रीराम की विजय के मूल्य को समझें। परन्तु ऐसा नहीं हुआ क्योंकि माताजी श्री निर्मल देवी का यह अवतरण अत्यन्त भ्रमित करने वाला है, महामाया है। अपनी इच्छा पूर्वक कार्य करने के लिए आप स्वतन्त्र हैं। छोटी-छोटी बातों के लिए तो वे श्री माता जी से पूछेंगे पर महत्वपूर्ण चीज़ों के लिए नहीं। एक प्रकार का दुरूपयोग शुरू हो गया है, इतने महान एवं महत्वपूर्ण अवतरण को व्यर्थ की चीज़ों के लिए उपयोग किया जाना।

अवतरणों के बीच अन्तर देखिए। एक अवतरण लोगों की रक्षा करने के लिए, लोगों को माया की माया से निकालने के लिए विश्व में आता है। परन्तु दूसरा अवतरण केवल इसकी बात करने के लिए नहीं, आपके आत्म-साक्षात्कार देने तथा आपकी छोटी-छोटी चीज़ों की देखभाल करने के लिए आता है। जब इस महिला ने टेलीफोन करके मुझे कहा कि कृपा करके मुझे ठीक कर दीजिए तो यह उन दिनों के भक्तों तथा आज के भक्तों का भिन्न दृष्टिकोण हैं। दोनों में बहुत बड़ा अन्तर है। मैंने कहा कि ''तुमने मुझसे पूछ कर यह सब नहीं किया, कोई बात नहीं। जो भी कुछ तुमने किया है मुझे तो बच्चे की देखभाल करनी है, उसे सुधारना है। पर तब मुझे लगा कि यह महिला अपने बच्चे के मोह में फंसी है। मैंने अगुआ को फोन किया तो उसने बताया कि वह भयंकर मोह लिप्त है। यह तो एक मूर्खता से दूसरी की ओर जाना हुआ।

इस अवतरण के पास करने के लिए बहुत से विचित्र कार्य हैं। यहां तक कि श्री गणेश की 64 कलाएं, 64 सुविज्ञताएं भी इन कार्यों को कर पाने में असमर्थ हैं। यह इतना जटिल क्यों हैं? आत्म साक्षात्कार देने के बाद तो यह आपके लक्ष्य तथा उन्नति की ओर सीधा रास्ता होना चाहिए था। फिर क्यों इतनी जटिल समस्याएं हर समय आपको घेरे रखती हैं? आप क्या चाहते हैं? हमें पूछना चाहिए कि आप क्या चाहते हैं? मुझे एक बच्चा चाहिए। सहज योग पाने के बाद आपकी कोई इच्छा नहीं होनी चाहिए। आपको बच्चा क्यों चाहिए? बहुत से बच्चे हैं, उनकी देखभाल कीजिए। ''मेरी इच्छा है'' आपके मस्तिष्क से चली जानी चाहिए। इच्छाएं अब समाप्त हो चुकी हैं, आप केवल अपना आत्म साक्षात्कार चाहते हैं। इसके पश्चात ''मेरी इच्छा'' ही अधिक महत्वपूर्ण है।

मैं चाहती हूँ कि आप वास्तव में भौतिकता से निर्लिप्त हो जाएं। पर इसका अर्थ यह नहीं कि आप हरे रामा हरे कृष्णा जैसे बन जाएं। नहीं वे निर्लिप्त नहीं है। वे अत्यन्त लिप्त लोग हैं। निर्लिप्तता ऐसी स्थिति है जहां आपको कुछ बांध नहीं सकता, कुछ भी महत्वपूर्ण नहीं रहता, आपका आध्यात्मिक उत्थान ही महत्वपूर्ण होता है, इससे अधिक कुछ भी आप को आकर्षित नहीं कर सकता। यह बात सहजयोगियों को समझनी है। सहजयोगियों के मुकाबले में अन्य साधकों ने कितने कष्ट झेले हैं। इनके बारे में पढ़ कर मुझे दु:ख होता है। पर यहां (सहज योग में) तो सब कुछ सुगम है, आएं, अच्छे खाने और संगति का आनन्द लें। एक उत्सव हो रहा है, सब कुछ अच्छा है और यदि किसी चीज की कमी हो तो मैं स्वयं आयोजकों से कहती हूं कि आपको यह सब करना चाहिए था।

अब हम उस स्थान पर आते हैं जहां हमें समझना है कि ''हम क्या चाहते हैं?'' शुम्भ-निशुम्भ को मारने का क्या लाभ है? आप गतिहीन हैं, एक ही स्थान से चिपके हुए हैं, कोई प्रगति नहीं है। तो इन सब कार्यों को करने का तथा नकारात्मकता को मिटाने का क्या लाभ है? क्या ध्येय है? सब कहते हैं कि श्रीमाताजी आपने इन्हें आज्ञा दी है। आप ही की छूट के कारण इनका ये हाल है। उस दिन एक लड़की

मेरे पास आई, उसका बच्चा अत्यन्त बीमार था। मैंने उससे पूछा : क्या तुम ध्यान करती हो? वह चुप रही। मैंने कहा कि मैं समझ सकती हूँ कि तुम ध्यान नहीं करती। मैं सब जानती हूँ। आज दशहरे का दिन है जब लोग अपने गांवों की सीमा पार करके माता-पिता के लिए सोना लाते हैं। अब आपको भौतिकता की सीमा लांघनी होगी क्योंकि यह तुच्छ शक्ति आपका मार्ग अवरोधित कर रही है। इससे ऊपर उठ कर आपको सहजयोग की सीमाओं से सोना लाना है जो कि कभी अशुद्ध नहीं होता।

आप में से कितने लोग वास्तविकता में कार्य क्षेत्र में उतरे हैं? आपमें से कितने इसके विषय में लोगों को बता रहे हैं। इस कार्य के लिए आप क्या कर रहे हैं? समर्पण की अवस्था आ गई है। उदाहरणार्थ आपको कोई समस्या है, जैसे आपके पास छुट्टी नहीं है और आप पूजा पर आना चाहते हैं। पूजा पर यदि आप आना चाहते हैं तो बस आ जाइए। आपको न केवल नौकरी मिलेगी, उन्नति भी मिल जाएगी। परन्तु आपको तो अपने उत्थान पर विश्वास ही नहीं है। आप विश्वास नहीं करते कि परमात्मा ने आपको चुना है।

अब हम हैं कहाँ? हमी लोगों (सहजयोगियों) को सभी शक्तियां प्रदान की गई हैं। हम आशीर्वादित हुए हैं पर हम इनका उपयोग नहीं करना चाहते। यह भी नहीं जानना चाहते कि हमें कौन सी शक्तियां मिली हैं। हम अपने बच्चों के लिए चिन्तित हैं, हमें चिन्ता है कि कौन सी साड़ी पहनेंगे या हमें चिन्ता है कि कौन अगुआ है और अगुआओं के विषय में हमें क्या करना चाहिए। इन बातों से हमें कोई लाभ न होगा। इसके लिए आप यहां नहीं हैं। समझने का प्रयत्न करें कि यहां आप आत्मा बनने तथा फिर आत्मा का प्रकाश फैलाने के लिए हैं। कुछ भी महत्वपूर्ण नहीं। एक बार जब आप ऐसा करने लगेंगे तो आप आश्चर्य चकित रह जायेंगे कि विश्वास कार्य करता है। यह अन्ध विश्वास नहीं है। मुझे बताने की आपको कोई आवश्यकता नहीं, बस यह (विश्वास) कार्य करता है। थोड़े दिनों में ही आपको यह सफलता मिल जाएगी जिसके पीछे आप भटक रहे थे। आप अनावश्यक भौतिक वस्तुएं पा भी लें। पर एक प्रश्न बना रहता है। मान लो कोई व्यक्ति सहजयोग को अपना जीवन समर्पण करना चाहता है। तो आप क्या करते हैं? समर्पण करके आप क्या करते हैं? आपका विश्वास सर्वोपरि है। आपको ज्ञान होना चाहिए कि किसी चीज़ में आपका विश्वास कैसा है। आप इसमें वास्तव में विश्वास करते हैं या नहीं। यदि आप इसमें विश्वास करते हैं तो इसके लिए आपने क्या किया? इस स्थिति में आपको अन्तर्दर्शन करना होगा। आप क्या कर रहे हैं? हमें क्या करना है? किस सीमा तक हमें जाना है?

यह समय अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं और आप लोग भी अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। परन्तु यदि आप अपनी तथा अपनी शक्तियों का मूल्य नहीं समझते तो परमात्मा क्यों आपकी चिन्ता करें? क्यों परमात्मा आपको नये विचार प्रदान करें? इस तरह के लोगों में क्यों वह दिलचस्पी लें। हमें अपने अन्दर देखना चाहिए, अर्न्तदर्शन करना चाहिए कि हमने सहजयोग के लिए क्या किया? बस मैं अपने बच्चों की देखभाल करती रही तथा पति के लिए खाना बनाती रही। पुरूष भी इसी तरह सोच सकते हैं। हमने क्या किया? हमने सहजयोग के लिए क्या किया? मैं बस राजनीतिज्ञों या कि व्यक्ति विशेष तक ही पहुंचना चाहता हूँ। किस लिए? वे आकर आप से मिलेंगे। परन्तु आपका स्वयं में विश्वास अति दुर्बल है। आत्म विश्वास की कमी ही सारे पतन का कारण है।

आत्म विश्वास ऐसी शक्ति है। इस बात को आप जानते हैं। आपने मेरे फोटो देखे हैं और उनके विषय में आप विश्वस्त हैं। विश्वस्त होने की कोई बात नहीं, पर आपके हृदय में यह विश्वास दृढ़ नहीं है। यह बाह्य है, आपका अस्तित्व नहीं बना। ठीक है, श्री माता जी इस कार्य को करेंगी, उस समस्या को सुलझाएंगी। परन्तु अब मुझे लगता है कि मुझे साफ-साफ बताना होगा कि आपको तपस्या करनी होगी। किसी से पूछिए क्या आप ध्यान करते हैं? नहीं श्री माता जी। तो यहां आप क्या कर रहे हैं। मेरे घुटनों में दर्द है इसलिए मैं आपके पास आया हूँ। परन्तु मैं ध्यान नहीं करता। मैं अत्यन्त ईमानदार हूँ। पर हानि किसकी है? मेरी हानि नहीं है, मुझे सहजयोग की आवश्यकता नहीं है। आपके सहजयोग के लिए मैं इतनी तपस्या कर रही हूँ। क्या आप भी इसके लिए कुछ तपस्या कर रहे हैं?

आपको आत्म साक्षात्कार मिल गया है। अब आपको आन्तरिक ज्ञान है तथा परमात्मा से अपने सम्बन्ध की भी समझ आ गई है। आप यह सब जानते हैं। फिर भी आपके हृदय तथा शुद्ध इच्छा में गहनता नहीं है। स्वयं को धोखा देने का कोई लाभ नहीं। मैं किसी अन्य के लिए ये बातें नहीं कह रही हूँ। आप सब को कह रही हूँ। स्वयं को धोखा न दें। महान लक्ष्य के लिए आप यहां हैं। और यह लक्ष्य है स्वयं को सुधार कर, मूर्खतापूर्ण एवं विध्वंसक शक्तियों से अपने मस्तिष्क को स्वतन्त्र करके, इस स्वतन्त्रता के बारे में सबसे

बात करना तथा इसे चारों ओर फैलाना। मेरा दृढ़ विश्वास है कि सहजयोगियों में कुछ ऐसा घटित होना है जिससे वे अनन्त निहित शक्ति, जो कि बाहर आने को आतुर हैं, के महत्व को समझ सकें तथा कार्यान्वित कर सकें। यह एक उत्तरदायित्व है, कोई अन्तर नहीं पड़ता चाहे आप यहूदी हों या ईसाई। यह सब बाह्य है। इनका ध्यान आपने किस लिए करना है। चेतना और उच्च जीवन के एक नये क्षेत्र में आप आ गए हैं जहां आपको अन्तरआत्मा का एवं अच्छे बुरे का ज्ञान है। यह ज्ञान पा कर भी यदि आप विकसित नहीं होते तो किसे दोष देंगे?

अब हमें कलयुग का महत्व समझना है जिसमें आपकी सहायता करने के लिए, कोमलता से आपकी देखभाल करने के लिए तथा प्रेम पूर्वक आपको हर बात बताने के लिए आपकी मां अवतरित हुई हैं। वास्तव में प्रेम वश आपका कर्तव्य समझाने के लिए भी मैं एक मिनट से अधिक किसी से नाराज़ नहीं रह सकती। यह सभी बातें मैं आपको बताती रही कि आपके अन्दर आपकी अपनी शक्ति है जिसकी देखभाल तथा प्रशंसा आपने करनी है। इस कार्य के लिए आपके पास बहुत सी पुस्तकें हैं तथा इसे समझने की बहुत सी विधियां हैं। पर इस आन्तरिक ज्ञान के प्रति आपका रवैया इस प्रकार है: कि मुझमें सृजन करने का आन्तरिक ज्ञान है पर मैं ऐसा नहीं करता! ठीक है, मुझ में अन्तर्ज्ञान है, मैं पी.एच.डी हूँ, परन्तु मैं पागल हूँ। मैं जानती हूँ कि सहजयोग में बहुत से लोग मानसिक रूप में समर्थ हैं। परन्तु सहजयोग का अनुसरण वे नहीं करते। अतः अब मैं आपको चेतावनी दे रही हूँ। यह भी ऐसा ही है जैसे ईसा ने कहा है: कुछ अंकुरित बीज गली में गिर का सूख गए और नष्ट हो गए। अब हर समय निर्णय चल रहा है।

हर रात आपको ध्यान करना है और फिर सोचना है कि आज मैंने क्या किया, क्या प्राप्त किया? यहां सब कुछ व्यर्थ की बातों को महत्व देते हुए, समय के बन्धन में रह कर किया जाता है। वास्तव में तो आपने अपने विश्वास को बढ़ाना है। मैं सच्चे कार्य करूंगा जो विवेकशील होंगे, दायीं ओर की यही पूजा है क्योंकि आप श्री राम और उनके धनुष की पूजा करते हैं। परन्तु इस अवतरण के बारे में सोचिए। एक विशेष ध्येय के लिए ये चौदह वर्ष के लिए जेल में गए। किसी अन्य के लिए एक वर्ष के लिए जाना भी कठिन कार्य होता। यह जेल नहीं थी, वे जंगल में गए थे, पर उनके लिए जेल सम थी। वे राजकुमार थे पर रहने और सोने के लिए उनके पास घर न था। जहां भी वे जाते उन्हें अपनी कुटिया बनानी पड़ती। उन्होंने यह सब क्यों किया? क्योंकि उन्हें स्वयं पर विश्वास था। उन्हें सर्वशक्तिमान परमात्मा पर विश्वास था। जो कुछ भी उन्होंने किया परमात्मा की इच्छा मान कर किया। यही सब मुझे करना है, बस। चिन्ता नहीं मुझे रावण का सामना करना पड़े या किसी अन्य का।

मैं सहजयोगी हूँ, मुझे कोई चिन्ता नहीं। सहजयोग का प्रचार, आत्म-शुद्धि करना तथा आत्मज्ञान पाना मेरा कार्य है। यही मेरा कार्य है, यही मेरा कर्तव्य है और यह मुझे करना है। चिन्ता नहीं स्कूल में मुझे प्रवेश मिले या न मिले। चिन्ता नहीं किसी को वायुयान का टिकट मिले या न मिले। आप को यकीन नहीं होगा कि स्वयं पर विश्वास यदि आपको है तो जहां भी आप चाहेंगे आपको प्रवेश भी मिलेगा और टिकट भी। इन सब बातों के लिए आपको न तो संघर्ष करना पड़ेगा और न चिन्ता। मेरे जीवन पर यह घटित होता रहा। निःसन्देह मेरा विश्वास जिब्राल्टर की चट्टान की तरह दृढ़ है। मैं जानती हूँ कि मैं क्या हूँ और मुझे क्या करना है। मुझे कोई समस्या नहीं विश्वास के कारण से। मैं सब को जानती हूँ तथा सब को तुरन्त पहचान सकती हूँ। चाहे मैं कभी कभी इस बात को प्रकट न होने दूं और कहूं ठीक है, यह अच्छा है। परन्तु मैं वास्तव में जानती हूँ कि मैं क्या हूँ और मुझे क्या करना है।

इसी प्रकार आपको अपने विषय में जानना है क्योंकि आप भिन्न श्रेणियों के लोग हैं। आपको परमात्मा से या श्री माता जी से सुरक्षा नहीं चाहिए, आपको तो अन्य लोगों को सुरक्षा प्रदान करनी है, उन्हें प्रकाश देना है तथा उनका मार्ग दर्शन करना है। इस लक्ष्य के लिए आप यहां हैं, घर प्राप्त करने या आयकर में छूट पाने के लिए आप यहां नहीं आये। इस सब मूर्खता को आप भुला दें। फिर भी उन्हें यह छूट आपको देनी ही होगी। मैं पूर्णतया इसी प्रकार रहती हूँ। यात्रा करते हुए मैं कभी नहीं सोचती की मैं यात्रा कर रही हूँ। मैं तो बस सोचती हूँ कि मैं यहां हूँ।

हमें अपनी भाषा तथा शैली परिवर्तित करनी होगी। हमारी समझ यह होनी चाहिए कि हम कठोर व्यक्ति हैं, अपने प्रति हम कठोर हैं परन्तु दूसरों के प्रति हम करुण, कोमल तथा मधुर हैं। एक बार तबादला होने पर हम एक घर में गए जहां सोने के लिए केवल पलंग था जिस पर मेरे पति सोए हुए थे। मैंने कहा ठीक है और चुनौती स्वीकार करके मैं पृथ्वी पर सो गई। अगले दिन मेरे शरीर में दर्द था। मैंने शरीर से कहा कि सुधर जाओ। पत्थरों पर सोना भी सीखो। और एक महीने तक फर्श पर सोई। आपको

अपने शरीर के प्रति कठोर होना चाहिए और अपने मस्तिष्क के प्रति भी क्योंकि यही आपको भौतिकता के विचार देता है तथा आपका आध्यात्मिक विकास बाधित करता है। लोग नये पलायन खोजते हैं। शरीर तथा मस्तिष्क के प्रति इस प्रकार के दृष्टिकोण रखने से आप उस अन्तिम बिन्दु तक पहुंच जाएंगे जहां भौतिक तथा बौद्धिक जीवन के या एक प्रकार के आध्यात्मिक जीवन आदि के बारे में नहीं सोचेंगे। पर आप सोचेंगे कि ठीक है अब मैं इससे मुक्त हूँ। और आपको मुक्त व्यक्ति बन कर स्वतन्त्रता पूर्वक कार्य करना है। ऐसी अवस्था को यदि पा लें तो आप बैठ कर उस स्थिति में रह सकते हैं।

किस प्रकार हम विश्वास करें, क्या प्रमाण है कि हम उस अवस्था में पहुंच गए हैं? आपको यह दर्शाना है। सहजयोग में एक धारणा है कि फलां व्यक्ति बहुत वरिष्ठ सहजयोगी है। मेरी समझ में नहीं आता कि क्या है? सहजयोग में वरिष्ठता कैसे हो सकती है? यह वरिष्ठता नहीं हो सकती। मान लो एक व्यक्ति समुद्र में घुसता है, वहां किनारे पर डर के कारण पृथ्वी से चिपके बहुत से लोग युगों से खड़े हैं। परन्तु कल आए कुछ अन्य लोग समुद्र में कूद रहे हैं और तैर कर आनन्द उठा रहे हैं। तो किनारे पर युगों से खड़े लोग वरिष्ठ किस प्रकार हो सकते हैं? सहजयोग में यह वरिष्ठता आदि कुछ नहीं है।

एक अन्य चीज, जिसके हम शिकार हैं, वह है "श्री माता जी ने ऐसा कहा।" कोई भी कहेगा कि श्री माताजी ने मुझे बुला कर ऐसा कहा। उन्होंने क्या कहा? ओह आप अत्यन्त महान सहजयोगी हैं, आप ये हैं, आप वो हैं। दो सम्भावनाएं हैं: एक तो यह कि मैं महामाया हूँ और आप को बेवकूफ बनाने के लिए मैंने ऐसा कहा हो या हो सकता है कि मैंने उसे हवा दी हो ताकि वह सहजयोग में जम जाए। माँ ने कहा कि तुम इतने महान सहजयोगी हो, इतने सहज हो आदि। बड़े-बड़े शब्दों का वे प्रयोग करेंगे। सहजयोगी की स्थिति का निर्णय उसके दावों से नहीं होता उसकी उपलब्धियों से होता है। मैंने देखा है कि कुछ सहजयोगी बहुत ही हेकड़ हैं, वे अपने जैसा किसी को नहीं समझते। मैंने देखा है कि ऐसे घमण्डी लोग अपने को महान दिखाने के लिए बड़ा तमाशा करते हैं। ऐसे लोगों को गोल-मटोल (हम्पटी-डम्पटी) कहते हैं।

पर एक वास्तविक सहजयोगी कैसा होता है? उसकी शैली: वह मात्र देखता है, साक्षी भाव से सब कुछ देखता है, आनन्द लेता है तथा सारी घटनाओं पर हँसता है। यह व्यक्ति इस प्रकार की बातें क्यों कर रहा है, इस तरह बोलने का क्या लाभ है? सहजयोगी एक रत्न होता है, उसे जहां भी आप ले जाएंगे लोग कहेंगे कि यह रत्न है। मैं स्वयं जब किसी सहजयोगी को देखती हूँ तो तुरन्त अन्तर्ध्यान हो जाती हूँ। और फिर उस व्यक्ति को भिन्न परिपेक्ष तथा सूझ-बूझ से देखती हूँ। क्योंकि ये सारी शक्तियां आप में भी हैं, यह केवल मेरी शक्ति ही नहीं। आपमें और मुझमें मात्र इतना अन्तर है कि मुझे स्वयं में पूर्ण विश्वास है और आप को स्वयं पर विश्वास नहीं है।

हम एक चौराहे पर खड़े हैं जहां हमने समझना है कि कौन उत्थान को प्राप्त करेगा तथा कौन पतन को। आपको खोजना होगा कि कौन कुछ प्राप्त कर पाएगा। उस व्यक्ति के मुकाबले में मैं कहां हूँ? कहा गया है कि आप को कष्ट उठाने पड़ेंगे, ऐसा करना पड़ेगा। पर परमात्मा की कृपा से अब ऐसा कुछ नहीं है। यह क्या है, सहजयोगी को क्या होगा? पर आप कैसे जान पाएंगे कि कौन सहजयोगी है। आप कैसे जान पाएंगे कि कौन केवल ज़बानी जमा खर्च कर रहा है? एक ही तरीका है कि आप विकसित हों, शीशे की तरह बनें और स्वयं देखें कि दूसरा व्यक्ति कैसा है और यह भी देखें कि आप स्वयं क्या हैं। आज का भाषण आपको यह बताने के लिए है कि आज जो भी कुछ हमने किया है वह हमारे अपने जीवन के मूल्य को समझने के लिए है। हमें समझना चाहिए कि हम इस पृथ्वी पर क्यों आये, हमारा लक्ष्य क्या है तथा हमें प्राप्त क्या करना है।

इसके साथ ही मैं हृदय से आपको आशीर्वाद देती हूँ। मैं चाहती हूँ कि परमात्मा की इच्छा के महान दीप बनने के लिए आप मेरे आशीर्वाद को स्वीकार करें। समझने का प्रयास करें कि कितने महत्वपूर्ण समय में हमारा जन्म हुआ और आप परमात्मा के इतने सुन्दर व्यक्ति बनें।

परमात्मा आपको धन्य करें।

दिवाली पूजा

रूस 12, नवम्बर 1993

देवी लक्ष्मी की पूजा करनें विश्वभर से रूस में आये इतने सारे लोगों को देख कर प्रसन्नता हुई।

बौद्धिक रूप से जब आप सारी चीजों को नहीं समझा सकते, जिस बात को आप शब्दों से या तर्क से नहीं कह सकते तो उसे कहने के लिए तथा अन्तर्अभिव्यक्ति करने के लिए आपको कला तथा प्रतीकों की शरण लेनी पड़ती है। कलाकार तथा कवि यही करते हैं; अपनी कल्पना को वे उस कदर फैलाते हैं कि प्रतीकों का सृजन कर डालते हैं। परन्तु सीमित मस्तिष्क के कारण वे एक सीमा तक ही जा सकते हैं और यदि यह सृष्टि सत्य और वास्तविकता सिद्ध न हो तो कुछ समय पश्चात इसका पतन हो जाता है। पूर्ण रेखांकीय गति-विधि नीचे आ जाती है तथा इसका पतन हो जाता है। हर क्षेत्र में हमें ऐसा देखने को मिलता है, विशेष कर आजकल जब कि सभी महान चीज़ों का ह्रास हो गया है।

परन्तु आत्म साक्षात्कार पाने के बाद जब आप आत्मा बन जाते हैं तो आपकी कल्पना वास्तविकता को छू लेती है। तब विकृत तथा मिथ्या-निरूपित प्रतीक छुट जाते हैं और आप प्रतीकों की वास्तविकता को छू लेते हैं। हर जगह यही घटित हुआ। उदाहरणार्थ भारत में वैभव की देवी लक्ष्मी। सन्तों और पैगम्बरों ने वास्तविकता में लक्ष्मी के प्रतीक का वर्णन किया परन्तु बाद में लोग इस प्रतीक तथा इसमें छिपी वास्तविकता को न समझ सके तथा सोचा कि लक्ष्मी धन, वैभव, सोना, चांदी और हीरे ही है और वे धन की पूजा करने लगे। इस प्रकार वैभव का प्रतीक देवी लक्ष्मी, विकृत हो गया।

लोग समझ नहीं पाते की जब उन्हें धन प्राप्त हो जाता है तो वे गलत कार्य क्यों करने लग जाते हैं। लक्ष्मी का प्रतीक अत्यन्त भिन्न है। सर्वप्रथम, जिसके पास लक्ष्मी है उसे माँ सम होना चाहिए, माँ की तरह से ही उसमें बच्चों के प्रति प्रेम होना आवश्यक है। उसे स्त्री सम होना है, और स्त्री अत्यन्त उच्चता का प्रतीक है। माँ सारी शक्तियों का स्त्रोत है। उसमें धैर्य है, प्रेम और करुणा है। करुणाविहीन धनवान व्यक्ति कभी भी प्रसन्न नहीं हो सकता। अपना धन दूसरों के हित के लिए उपयोग करने में ही उसे प्रसन्नता प्राप्त हो सकती है। आज के विकसित देशों के साथ क्या हुआ? अपने धन से वे स्वयं को ही नष्ट करने में जुट गये हैं। अपने क्रोध, कामुक्ता तथा लोलुपता को अभिव्यक्त करने में उन्होंने अपना सारा धन लगा दिया। यह दर्शाने में कि वे बहुत व्यक्तिवादी हैं, उन्होंने अपना सारा धन बर्बाद कर डाला। जैसे अमेरिका में मैं एक वैभवशाली व्यक्ति से मिली, जब मैं उसकी कार तक पहुँची तो उसने बताया कि कार के दरवाजों के हैंडल दूसरी ओर को खुलते हैं। तो मैंने कहा इसका क्या लाभ है। कोई भी व्यक्ति कार में फंस जाएगा। उसने कहा ये मेरा व्यक्तित्व है, मेरी योग्यता है जिसने यह असमान्य चीज बनाई। जब मैं उसके घर गई तो उसने बताया कि सावधान रहें, यह गुसलखाना बहुत विशेष है। यह बटन यदि आप दबाएंगी तो उछलकर तरणताल में जा मिलेंगी। मैंने कहा कि मैं इस गुसलखाने में नहीं जा सकती। तब उसने अपना शयन कक्ष दिखाया, यदि आप यह बटन दबायेंगी तो आपका सिर ऊँचा हो जाएगा। मैंने कहा कि मैं सारी रात इस तरह की वर्जिश नहीं करना चाहती, मैं तो पृथ्वी पर ही सो जाऊँगी।

लोग सोचते हैं कि अमेरिका या योरोप के वैभवशाली कहलाने वाले लोग बहुत प्रसन्न हैं। परन्तु वे प्रसन्न नहीं हैं क्योंकि उनमें विवेक नहीं है। वे पैसे को इस तरह से बर्बाद करते रहते हैं। इन लोगों के पास इतना धन था कि वे समझ न पाए कि इसका क्या करें। अब उन्होंने सोचा की यह प्रर्याप्त नहीं है, हमें और आगे खोज करनी है। तब वे नशे तथा सब प्रकार की बुरी चीजें लेने लगे। लक्ष्मीतत्व ऐसा ही है। वे एक माँ हैं और उनके दो हाथों में गुलाबी रंग के कमल हैं। कमल का फूल अपने अन्दर काले-कंटीले भंवरे को भी शरण देता है। इसका अर्थ यह हुआ कि लक्ष्मीपति का परिवार कमलसम सुन्दर तथा सबका स्वागत करने वाला होना चाहिए। भंवरा कमल की सुन्दर कलियों पर रात को शयन करता है और कमल उसे ठंड से बचाने के लिए अपनी कलियाँ बंद कर लेता है। आवश्यक नहीं कि

एक वैभवशाली व्यक्ति लक्ष्मीपति हो या उसे लक्ष्मी जी का आर्शीवाद प्राप्त हो। परन्तु एक विवेकशील वैभवशाली व्यक्ति को लक्ष्मीजी की आशीष प्राप्त होती है। जैसे कमल अपने अन्दर अतिथियों के आने के लिए तथा उनकी देखभाल करने को उत्सुक रहता है इसी प्रकार एक वैभवशाली व्यक्ति को भी अतिथिसत्कार करने को उत्सुक रहना चाहिए।

हैरानी की बात है कि वैभवशाली कहलाने वाले सारे राष्ट्र पराश्रयी हैं। उन्होंने अन्य देशों को लूटा और अपने साम्राज्य बनाये। जैसे भारत में तीन सौ सालों तक अंग्रेज हमारे अतिथि थे। बिना किसी आज्ञा के यहां आ गये। परन्तु अब यदि किसी भारतीय को इग्लैंड जाना हो तो यह बहुत कठिन कार्य है। जो लोग वहाँ जाते हैं उनसे भी समानता का व्यवहार नही किया जाता। अमेरिका में भी ऐसा ही है। परमात्मा का धन्यवाद, कि कोलम्बस, जो की भारत आ रहा था, उसे श्री हनुमान जी अमेरिका ले गये, नहीं तो सारे भारतीय समाप्त हो जाते।

उन्होंने वहां पर सारे लाल भारतीयों को मार डाला, उनकी सारी जमीन हथिया ली और अब वे स्वयं को वैभवशाली कहते हैं। जो अपराध उन्होंने किये हैं उसका दण्ड उन्हें भुगतना होगा। अधिक धन कमानें की योग्यता के आधार पर स्वयं को उच्च-जाति कहने वाले अन्य लोग भी हमें देख सकते हैं। उन्होंने लोगों को गैस-कक्षों में मरवा दिया और इस तरह के अन्य अपराध किये। क्या यही उच्चता की निशानी है? ईसा यदि उच्च व्यक्तित्व के प्रतीक हैं तो उनकी क्या विशेषताएं हैं। वे श्रेष्ठ पुरुष थे, चरित्र, क्षमा, उदारता और गरिमा का जहाँ तक सम्बन्ध है उनका महानतम व्यक्तित्व था। उन्हें लक्ष्मीजी का आर्शीवाद प्राप्त था। वे आत्म-सन्तुष्ट थे। कोई गलत कार्य वे न करते थे। कोई उन्हें खरीद नहीं सकता था।

सहजयोग में आने के उपरान्त यह जानना आवश्यक है कि आप पर लक्ष्मी जी की कृपा है। वे एक हाथ से देती हैं। देना उनका स्वभाव है। जैसे यदि केवल एक द्वार खुला हो तो हवा नहीं आती, परन्तु दूसरा द्वार भी आप खोल दें तो हवा बहने लगती है। सन्तुष्ट रहना सहजयोगी की एक विशेषता है। कुछ सहजयोगी बहुत से चमत्कार चाहते हैं, यह ठीक नहीं। आपका दृष्टिकोण यह होना चाहिए की अब आप आत्मा हैं और आत्मा शरीर और मन के सुख की चिंता नहीं करती, यह तो आत्मा का सुख चाहती है। आप में से बहुत से लोग आत्मा बन चुके हैं परन्तु आप अपनी स्थिति के प्रति चेतन नहीं है, इसके प्रति आपको चेतन होना है।

दूसरे हाथ से श्री लक्ष्मीजी उन लोगों को सुरक्षा प्रदान करती है जो उनके लिए कार्य करते हैं तथा उनकी पूजा करते हैं। हर वैभवशाली व्यक्ति को चाहिए की अपने आश्रितों को सुरक्षा प्रदान करें।

हम अब एक ऐसे क्षेत्र में उत्थित हो गये हैं जहां हमारे मष्तिष्क में कोई धर्मान्धता नहीं है, परन्तु हम सभी महान अवतरणों, सन्तों और पैगम्बरों की पूजा करते हैं। उनमें से अधिकतर के पास धन न था परन्तु वे आत्म संतुष्ट थे। लक्ष्मीजी की यह विशेषता है कि वे सन्तोष प्रदान करती हैं। आप जानते हैं कि अर्थशास्त्र के अनुसार प्रायः इच्छाओं की पूर्ती नहीं होती। कौन सी ऐसी इच्छा है जिसकी पूर्ती हो सकती है? यह शुद्ध इच्छा है, जो की कुण्डलिनी है। जब आप पूर्णतया संतुष्ट हो जाते हैं और जान जाते हैं कि धन, सत्ता और अन्य मूर्खता-पूर्ण चीजों के पीछे भागने का कोई लाभ नहीं तब आप के अन्दर महालक्ष्मी तत्व जागृत हो जाता है। यह महालक्ष्मी तत्व आपको जिज्ञासा प्रदान करता है। तब आप एक विशेष श्रेणीं के लोग बन जाते हैं जिन्हें विलियम ब्लेक ने 'परमात्मा के पुरुष कहा है'। तब आप में बचपन के, राष्ट्रीयता के या बाह्य-धर्मो के बन्धन नहीं रह जाते। आप का उत्थान होता है और आप आत्मा बन जाते हैं। इस समय आप अपने अन्दर के लक्ष्मी तत्व को समझते हैं। लक्ष्मी तत्व यह है कि दूसरों के लिए कार्य करने में आप आनन्द प्राप्त करें। सामूहिक चेतना में आप अन्य लोगों के लिए कार्य करना चाहते हैं। अभी तक भी यदि आप अपनी सुख-सुविधा, धर्नाजन और यश के लिए चिंतित हैं तो आप असन्तुलित हैं।

लक्ष्मीजी कमल पर बड़े सन्तुलित ढंग से खड़ी हैं। वह यह नहीं दर्शाती की वह वैभव की देवी हैं। स्वयं से वे संतुष्ट हैं। यदि आप असंतुष्ट हैं तो इसका अर्थ है कि आपने स्वयं को नहीं जाना। आप आधे-अधूरे सहजयोगी हैं। सहजयोगी आत्मसंतुष्ट व्यक्ति होते हैं। क्योंकि सहजयोगी की आत्मा ही पूर्ण ज्ञान, आनन्द और उसके चित्त प्रकाश का स्रोत होती है। आनंद, प्रसन्नता या अप्रसन्नता नहीं है। प्रसन्नता या अप्रसन्नता तो अहम् पर निर्भर है परन्तु आनंद अपने आप में पूर्ण है। आत्म-साक्षात्कार के बाद आप धन आदि की चिंता नहीं करते। आपके पास यदि धन है तो भी ठीक और यदि नहीं है तो भी ठीक। आप पूर्णतया निर्लिप्त हैं।

अन्त में मैं आपको श्री राम की पत्नी श्री सीता जी के पिता की कहानी सुनाऊँगी। छः हजार वर्ष पूर्व वे एक राजा थे। राजाओं के सारे वस्त्र, आभूषण उन्हें धारण करने पड़ते थे। परन्तु उस समय के सारे संत उनके चरण स्पर्श किया करते थे। एक बार एक अन्य गुरू के शिष्य नचिकेता ने पूछा कि आप लोग इनके पैर क्यों छूते हैं? ये तो राजा के समान रहते हैं। गुरू ने कहा कि तुम इनके बारे में नहीं जानते। यदि उन्हें तुम पर दया आ जाए तो वे तुम्हें आत्मसाक्षात्कार प्रदान कर सकते हैं। नचिकेता राजा जनक के पास गये और उनसे आत्मसाक्षात्कार की याचना की। राजा जनक ने कहा की मुझे दुःख है कि मैं तुम्हें आत्मा साक्षात्कार नहीं दे सकता। तुम मेरा सारा राज्य ले लो पर मैं तुम्हें आत्मसाक्षात्कार नहीं दे सकता क्योंकि अभी तक तुम्हारा व्यक्तित्व इतना विकसित नहीं हुआ है। नचिकेता बहुत निराश हुए और कहने लगे मैं तब तक प्रतीक्षा करूँगा जब तक आप मेरी परीक्षा लेकर यह नहीं जान लेते कि मैं आत्मसाक्षात्कार के योग्य हूँ। राजा जनक ने कहा, ठीक है, आओ चलें नदी में स्नान करें। जब वे नदी में स्नान कर रहे थे तो नौकरों ने आकर सूचित किया कि महल में आग लग गयी है पर राजा जनक ध्यान करते रहे। थोड़ी देर बाद नौकर फिर आये और कहा कि अग्नि यहाँ तक फैल रही है और आपके वस्त्र भी जल जाएंगे। पर राजा जनक ध्यान-मग्न रहे, परन्तु नचिकेता ने उनके वस्त्र उठाए और दौड़ पड़े। तब उन्हें समझ आया की राजा जनक अपने धन, वैभव और परिवार से कितने निर्लिप्त थे। और वे स्वयं छोटी-छोटी चीजों के लिए कितने चिंतित। राजा जनक को इस तरह के कपड़े पहनने पड़ते थे क्योंकि वे एक राजा थे। तब नचिकेता ने स्वयं को राजा जनक के सम्मुख समर्पित कर दिया और **आत्मसाक्षात्कार** प्राप्त किया।

उन दिनों आत्म साक्षात्कार पाना तथा देना अत्यन्त दुष्कर कार्य था। परन्तु आजकल का समय विशेष है, बसन्त ऋतु। इसे 'अन्तिम निर्णय', 'पुनर्जन्म का समय' तथा कुरान में इसे 'कयामा' कहा गया है। कहा गया है कि कबरों में से निकल कर लोग पुनर्जन्म को प्राप्त करेंगे, पर कब्र में तो थोड़ी सी हड्डियों के सिवाय कुछ भी नहीं बचता। ऐसी, यह सारी मृत-आत्माएं मानव जन्म ले कर इस विशेष युग में आत्म-साक्षात्कार प्राप्त करेंगी।

आपको अपने पूर्व-पुण्यों के कारण आत्म साक्षात्कार प्राप्त हुआ है। परन्तु आपको इसका सम्मान करना है तथा जानना है कि आपको इतनी महान चीज़ मिली। आप समझ लें कि अब आप आत्मा हैं। आप विशेष लोग हैं। आप अपने देश, जाति, समाज तथा परिवार की समस्याओं का समाधान करेंगे। पूरे विश्व की समस्याओं का आप समाधान करेंगे। आप लोग ही पृथ्वी पर शान्ति लाएंगे। आप ही सुन्दर, दिव्य मानवों से परिपूर्ण एक नये विश्व का सृजन करेंगे।

स्वयं पर विश्वास करें। यह विश्वास अत्यन्त द्रुतगति से कार्य करता है। यह मिथ्या विश्वास नहीं, यह सत्य है। सहजयोग में विकसित हों, बौने न बनें रहें।

अब आप लक्ष्मी जी का आशीष मांग रहे हैं। सर्व प्रथम आपको सन्तोष मांगना चाहिए और फिर उदारता। लक्ष्मी से आशीर्वादित व्यक्ति कभी कंजूस नहीं हो सकता। आप जानते हैं कि आपके कोई कर्म शेष नहीं रहे। सब कर्म समाप्त हो गए तथा अब आप अति सुन्दर नये मानव हैं। बसन्त काल आ गया है, अपनी परेशानियों तथा कष्टों की ओर चित्त न दें। निःसन्देह चीज़ें सुधरेंगी। कोई मुझे कह रहा था कि उसके घुटनों में दर्द है। मुझे लगा कि आपके दर्द को सोखने के कारण बहुत बार मेरे घुटनों में दर्द हो जाता है पर मैं इसके बारे सोचती ही नहीं। मैं कभी चिन्ता नहीं करती क्योंकि मुझे लगता है कि मेरा शरीर ठीक है। इस मशीन की तरह, यदि यह बिगड़ जाए तो इसे ठीक कर लीजिए, बस। परन्तु हर समय यदि आप यही सोचते रहें कि यहां दर्द हो रहा है, वहां दर्द हो रहा है, मेरे पास इतना धन है, मुझे यह करना है, व्यापार करना है तो कुछ न होगा। अब हमें उच्च चेतना के क्षेत्र में रहना होगा। किसी श्रेष्ठ तथा सुन्दर चीज़ के बारे में बोलती ही चली जा सकती हूँ। पर भाषण तो मात्र शब्द जाल (शब्द जालम्) हैं। आपको मस्तिष्क से परे जाना होगा। मेरा यही स्वप्न है और बहुत से लोगों ने इसे साकार किया है। मैं सदैव आपकी हूँ, जहाँ भी आप चाहेंगे मैं आऊंगी। मेरा प्रेम, मेरी इच्छा से अधिक है। परन्तु आप अपनी आत्मा से तथा अपने आत्म साक्षात्कार से प्रेम करें।

परमात्मा आप पर कृपा करें।

श्री कृष्ण पूजा

रुबेला, इटली 15, अगस्त 1993

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी जी का प्रवचन (सारांश)

यह हमें अच्छी तरह समझ लेना चाहिए कि हमारे भीतर श्री कृष्ण एक अतिआवश्यक देवता हैं क्योंकि यह विष्णु हैं जो भवसागर अर्थात नाभि में विद्यमान हैं। यह हमारे भीतर धर्म को अंकुरित करते हैं। जब आपको साक्षात्कार हुआ मैंने आपको नहीं बताया कि आप "यह करो" और यह "मत करो"। यह और वह अच्छा नहीं है। आपने केवल इसलिए यह जाना क्योंकि आपके भीतर विष्णु जागृत हो गए थे। यदि उन्हें जागृत किया जाए तो वह आपके भीतर प्रकाश उत्पन्न कर देते हैं जिससे आपकी अज्ञानता और अंधकार दूर हो जाता है और आप महसूस करने लगते हैं कि आप जो कर रहे थे वह विनाशकारी था और इस तरह से धर्म स्थापित हो जाता है। बेशक जो दस गुरू धरती पर आए उन्होंने धर्म की स्थापना की तथा धर्म के विषय में जानकारी दी। इस तरह से इन दस गुरूओं तथा श्री विष्णु ने मिल कर हमारे भीतर धर्म की स्थापना की। ध्यान देने योग्य है कि ईसा मसीह को भी इस विषय पर कहना पड़ा जब उन्होंने कहा : "आपकी आंखें अ..त्र नहीं होनी चाहिएं।"

श्री कृष्ण वह हैं जिन्होंने कहा है "जब-जब धर्म की हानि होती है मैं धरती पर आता हूँ।" उस समय वह उन सभी पापियों का नाश करते हैं जो धर्म को पतन की ओर ले जाने के लिए उत्तरदायी होते हैं। दूसरी बात उन्होंने कही थी कि "मैं संतों की सदा रक्षा करता हूँ तथा दानवों का, पिशाचों का तथा विनाशकों का संहार करता हूँ। विष्णु को हम धर्म का दाता मानते हैं। उनमें विद्यमान सभी गुण हमें श्री कृष्ण में मिलते हैं जब वह श्री कृष्ण रूप में इस धरती पर आए। श्री राम के समय में यह सभी गुण प्रकट नहीं किए जा सके।

श्री कृष्ण के जीवन का प्रथम आधा समय गोकुल और वृंदावन में व्यतीत हुआ। जहां उन्होंने अपने चरित्र को सुन्दर लीलाओं के रूप में प्रकट किया। उन्होंने कहा कि आप एक साक्षी बनें।" अब आप एक बालक की तरह, एक बालक के हर्ष और प्रमोद की तरह इस संसार को देखेंगे तो जीवन का आनन्द अनुभव करेंगे। कई लोग इसी अनुभूति से गोकुल और वृंदावन के वासी हो गए। तत्पश्चात उन्होंने सती दर्शन, पूतना वध तथा अन्य राक्षसों को मार कर यह प्रकट किया कि यदि कोई इस तरह के प्रफुल्लित बालक को कष्ट पहुंचाएगा तो भगवान स्वयं उसकी रक्षा करेंगे और उन सभी कष्टकारी दुष्ट आत्माओं का विनाश करेंगे। बाद में वह राजा बने। राजा बनने के बाद उन्होंने अपनी शक्ति को दूसरे ढंग से प्रयोग किया। सबसे पहले उन्होंने अपने दुष्ट मामा कंस का संहार किया। उन्होंने राजा बनने से पूर्व भी बहुत से लोगों की हत्या की। ईसा मसीह तथा कई धर्मात्माओं का कहना था कि "क्षमा करो।" श्री कृष्ण क्षमाशीलता पर विश्वास नहीं रखते थे। केवल वे ही एक थे जो कहते थे कि "उन्हें सजा देनी है।" सजा देने वाला भी कोई प्राणी होना चाहिए। शिव इनसे बिल्कुल विपरीत थे। वह राक्षसों से प्यार करते थे तथा उन्हें आशीर्वाद देते थे। इसलिए कोई ऐसा कठोर और दृढ़ विचार और बुद्धि वाला व्यक्ति चाहिए था जो राक्षस को राक्षस समझ कर संहार करे। लेकिन हम श्री कृष्ण नहीं हैं हमें क्षमाशील होना है। जब एक बार हम क्षमा कर देते हैं तो हम अपना गुस्सा, बदले की भावना, श्री कृष्ण को समर्पण कर देते हैं। वह सब ग्रहण कर लेते हैं और यदि उचित समझते हैं तो धर्मात्मा को कष्ट देने वाले तथा धर्म को हानि पहुंचाने वाले प्राणी को सजा देते हैं।

यह बहुत ही अचम्भे की बात है कि जिस क्षेत्र में महापुरूषों ने जो शिक्षा दी उसी क्षेत्र के लोग उससे विपरीत कार्य करने लगे हैं। ईसा मसीह ने कहा "आपकी आंखें अपवित्र नहीं होनी चाहिए।" जहां तक आंखों का प्रश्न है इस विषय में ईसाई ही सबसे अधिक अपवित्र हैं। इस तरह हिन्दु धर्म में कहा गया है कि सभी मनुष्यों में एक ही आत्मा निवास करती है पर हिन्दु धर्मावलम्बी ही सबसे अधिक जात-पात को मानने लगे हैं तथा धर्म के नाम पर आपसी झगड़े करने लगे हैं। इस तरह मुहम्मद साहब हमेशा ही "रहमत" सिखाते रहे। उन्होंने कभी भी शरीयत या वह

सभी बुराइयां नहीं कहीं जो आज मुस्लिम धर्म में पाई जा रही हैं। उन्होंने कभी भी मुस्लिम महिलाओं के लिए सिर या मुंह ढकने की बात नहीं कही परन्तु ऐसा हो रहा है। जब यह सब घटित होता है तो धर्म का ह्रास होता है।

जैसा की आप जानते हैं कि श्री कृष्ण का देश अमेरीका है और उन्होंने यहां पर राज्य किया। यह एक धनी देश है क्योंकि श्रीकृष्ण धन के देवता – कुबेर हैं। उनका एक और गुण है – "संरचना" करना। उन्होंने गाय और गोपियों के साथ नृत्य किया और अपनी शक्ति उन्हें स्थानान्तरित की। उनके द्वारा संचारित शक्ति अमेरिका में सबसे अधिक कार्य करती है परन्तु वह लोग इसे इससे बिलकुल विपरीत समझने लगे हैं। यदि सद्दाम हुसैन के साथ लड़ाई हुई तो अमेरीका वहां जा रहा है। कोरिया के साथ लड़ाई है तो अमेरीका वहां जा रहा है। जहां कहीं भी कोई समस्या होती है, अमेरीका वहां पहुंच जाता है। कोई उससे पूछे कि तुम कौन हो? तुम्हें क्या कष्ट है? अपने देश का ध्यान रखो और प्रसन्न रहो। यहां तक कि संयुक्त राष्ट्र संघ का गठन तथा चालन कार्य भी अमेरीका के ही निर्देशों पर होता है।

वास्तव में श्री कृष्ण की शिक्षा आज लुप्त हो रही है। जहां तक देशों में परस्पर विचार विनिमय तथा परस्पर संबंध स्थापित करने की बात हो वह सही है परन्तु जो सबसे बड़ी बुराई वहां घटित हो रही है वह है धर्म तथा चरित्र की अवहेलना। बिना नैतिकता के जनतंत्र। अमरीका में नैतिकता की बात करना प्रचलन के बाहर की बात है। यदि कोई नैतिकता की बात करता भी है तो उसे समझना उनकी बुद्धि से परे की बात है। यद्यपि आज उन्हें अपनी ही करनी की टीस कचोट रही है और वह अनुभव कर रहे हैं कि उनकेअनैतिक व्यवहार के कारण ही आज 65 अभिभावक परिवार ऐसी बिमारी के शिकार हो चुके हैं कि युवावस्था में ही उनकी किसी भी क्षण मृत्यु हो सकती है। इसके बावजूद भी वह सब कर रहे हैं और सोचते हैं कि यही ठीक है तथा उन्हें चिंता की जरूरत नहीं।

अब उसकी सजा शुरु हो जाती है। कल्पना करें कि कोई मनुष्य अनैतिक जीवन जीना आरंभ करता है और परिणामतः घातक बीमारी का शिकार हो जाता है। वह अनैतिक जीवन से उपजी बीमारियों के उपचार के हर तरीके ढूंढने का प्रयास करते हैं। अमेरीका की मेडीकल साइंस के लिए अनैतिक जीवन से उपजी बीमारियों के उपचार ढूंढ पाना बहुत ही कठिन कार्य है। उनके लिए अनैतिक जीवन को बुरा कहना ही बहुत कठिन कार्य है। प्रकट में वह कभी नहीं मान सकते कि अनैतिकता के यह सब परिणाम होते हैं। श्री कृष्ण की धरती पर नैतिकता की इतनी अवहेलना की जा रही है। बातें तो वहां नैतिकता स्वीकारने की होती हैं परन्तु वह नैतिकता कृत्रिम नैतिकता है जो कि ईसाईत्व, इस्लाम तथा हिन्दुत्व से बिलकुल भिन्न है। वह लोग मिथ्याचारों के आलोचक हैं। वह बात किसी और व्यवहार प्रणाली की करते हैं और अपनाते किसी और को हैं। अमरीका में सभी कुछ खुले आम होता है, वहां कुछ भी नहीं छुपाते। उनका कहना है कि वह पाखंडों और मिथ्याचारों के विरुद्ध हैं। यह देश जो इतना वृहद, धनी, सुन्दर और समृद्ध है वह इस भांति गर्त में जा रहा है कि मैं नहीं समझती कि इसका बिना सहजयोग अपनाए कैसे कल्याण होगा!

धर्म एक और कार्य जो करता है वह है किसी साधारण प्राणी को अन्तर्दर्शी बनाना क्योंकि एक धर्मात्मा व्यक्ति सदा स्वभाव से ही अन्तर्दर्शी होता है। वह सही वस्तु को देखना पसंद करता है। वह गलत वस्तुओं की ओर अपने मस्तिष्क को नहीं जाने देता। वह भले ही सहजयोगी न हो परन्तु कार्य करते समय वह अपने आप से ही पूछेगा कि वह सही है कि गलत। अमरीका के लोगों में इस शक्ति का सर्वथा लोप हो चुका है। यह अपने भीतर झांकने की चेष्टा भी नहीं करते बल्कि सदा यही कहते हैं कि इसमें बुराई क्या है? जो लोग इस तरह से अपनी मर्जी करते हैं वह अपने लिए कष्ट और परेशानियां ही पैदा करते हैं। यह आत्मदर्शन ही है जो आपको जागृति प्रदान करता है, जो आपको बताता है कि यह गलत है, बाह्य उपरी सतह पर है जबकि आपका अन्तःकरण आपके विवेक और नैतिक निरीक्षण से संचालित होता है। लोग पूछते हैं कि अन्तःकरण क्या है? अन्तःकरण हमेशा मनुष्य के भीतर रहता है। परन्तु व्यक्ति को उसके लिए जागरूक रहना है। यह अन्तःकरण श्री कृष्ण का प्रकाश है जो साक्षात्कार से पहले भी हमारे भीतर है। महालक्ष्मी की प्रेरणा से ही कुंडलिनी सुषुम्ना नाड़ी से हमारे भीतर जागृत होती है। यह श्री कृष्ण की शक्ति है। अपने अन्तःकरण की आवाज सुनकर ही आप अपने भीतर महालक्ष्मी के लिए सही रास्ता तैयार करते हैं। जब बात तर्क से परे की हो तो अन्तःकरण से पूछी जानी चाहिए।

जिस समय लोग दूसरे देशों पर आक्रमण कर रहे थे और उन पर अपना प्रभुत्व जमाने की कोशिश कर रहे थे तब

अमरीका ही एक सा देश था जो अपनी सीमाओं से कभी बाहर साम्राज्य स्थापित करने नहीं गया।

ऐसा न करने का क्या कारण था? कारण यह था कि उस समय कई महान व्यक्ति महान अन्त:करण के साथ उस देश में पैदा हुए थे। उन्होंने उस देश को मार्ग दिखाया। उदाहरणत: जार्ज वाशिंगटन, अब्राहम लिंकन आदि। और उन्होंने इस बात की आज्ञा नहीं दी कि उनका देश दूसरे देशों को जीतने की महत्वाकांक्षा रखे। पहले वहां स्पेनिश गए और फिर दूसरों ने अनुकरण किया। उन्होंने उस देश को जीता और वहीं बस गए और फिर वह युग उनके लिए समाप्त हो गया। फिर उन्होंने स्वतन्त्रता, प्रजातन्त्र, महान मूल्यों की बातें शुरू कर दीं। लेकिन उनके पिछले कार्य, जिस तरह से उन्होंने लाल भारतीयों की हत्या की, वह श्री कृष्ण द्वारा तब तक माफ नहीं किए जाएंगे जब तक कि वह सहजयोग को नहीं अपनाते। यद्यपि उन्होंने किसी देश पर प्रभुत्व जमाने और अपना साम्राज्य फैलाने की कोशिश नहीं की। वह हमेशा न्याय के लिए खड़े हुए। उन्होंने ऊपर से यह दिखाने की कोशिश की कि वह विश्व को एक सूत्र में बांध रहे हैं। वह रंगभेद और रूढ़िवाद केविरुद्ध हैं। एक तरह का आदर्शवाद उन्होंने फैलाया। मगर इसके बावजूद आत्म-विनाश के विचार उनमें कार्य करने लगे।

मैं यह कहूंगी कि यह कुछ नहीं है केवल उनके कर्म ही उनके विरुद्ध कार्य कर रहे हैं। अहिंसा वहां कितनी प्रबल है! कितनी बीमारियां आदि हैं! यह बात ध्यान योग्य है कि अमरीका में यह कठिनाइयां इस समय पैदा हुई क्योंकि उनका भंडा फोड़ होने वाला है। बहुत से झूठे गुरू वहां गए और उन्होंने उन भोले-भाले सीधे लोगों को, जो सच्चाई को खोज रहे थे, अपनाया। वहां के वातावरण में उन लोगों का अभिशाप भी कार्य कर रहा है जिनकी हत्या उन्होंने की। यह इन्हें गलत की ओर प्रेरित करता है। जहां तक उनका व्यक्तिगत जीवन है उसमें वह गलत चीज क्यों अपनाने लगे। उन्हें स्वतंत्रता दी गई परन्तु उन्होंने सोचा कि स्वतंत्रता अपना विनाश करने में है तथा अपनी जिंदगी में झंझट पैदा करने में है। गलत विचार ने उनमें काम किया। यह गलत धारणाएं उनमें इकट्ठी हो गईं और लोग विनाशकारी चीजों को पसंद करने लगे। हालीवुड में बड़ी विनाशकारी शक्तियों ने अपने समूह बनाए हैं तथा लड़ाकू संस्थाएं बनाई हैं जो प्रकट रूप से कहते हैं कि वह बुरे हैं, जैसे शैतान संगठन, दानव संगठन, चुड़ैल संगठन आदि। यह सब खुलेआम पंजीकृत संगठन हैं। वह सब इस सीमा तक चले गए हैं कि उन्होंने यह सब सम्मिलित रूप से अपनाया है। इसका कारण सजा है। इसीलिए अमरीका सहजयोग के लिए बहुत कठिन है। उनके लिए वास्तविक सहानुभूति किसी को रखनी चाहिए। अपने पूर्वजों के कुकृत्यों के कारण तथा धर्म को जीवन का आधार न मानने के कारण अब वे दण्ड भोग रहे हैं। वह सोचते थे कि धर्म का मतलब अपनी स्वतंत्रता को मारना है। धर्म का प्रयोजन है अपनी निजी जिंदगी को किन्हीं और हाथों में दे देना। इसलिए अमरीका में धर्म को स्थापित करने के लिए हम क्या कर सकते हैं? मैं अमरीका में रूस से दस बार अधिक गई तथा वहां जाकर उन्हें ध्यान दिलाना चाहा कि वह अपना धर्म खो चुके हैं। परन्तु उन्हें यह बात कभी भी समझ नहीं आई क्योंकि वह लोग बहुत अहम्वादी हैं। यदि रजनीश जैसे लोग उनके अहम् को प्रोत्साहित करे तो वह बहुत खुश हैं। यह काम उनके लिए कठिन है क्योंकि वह सजा के आधीन हैं। वह इस सजा से छुटकारा पा सकते हैं यदि वह सहजयोगी बन जाएं। सहजयोग से उनके भीतर धर्म जागृत होगा तथा उनकी सभी सजाएं और कारण समाप्त हो जायेंगे। अमरीका को अन्य देशों से कहीं अधिक सहजयोग की आवश्यकता है। अमरीका से मेरा संबंध इसी कारण से है।

दक्षिणी अमरीका भी एक ऐसा देश है जहां धर्म के लिये कोई मार्गदर्शन नहीं है। वह लोग भी उत्तरी अमरीका के ही पदचिन्हों पर चल रहे हैं। उत्तरी अमरीका में मूर्खता का बोलबाला है। वह रंगरलियां मनाते हैं। उनके लिये रिओ में जाकर रंगरलियां मनाना बहुत बड़ी बात है। स्थिति इतनी बुरी है कि उन्हें यह स्पष्ट करना आसान नहीं है कि वह इस सीमा तक क्यों जाते हैं।

ब्राजील में खुले आम एक 13 वर्ष की लड़की को वैश्यावृत्ति में ढकेल दिया जाता है। तस्करी खुले आम होती है। उनके राजनीतिज्ञ भ्रष्ट हैं। वहां काला जादू बहुत है। कैथोलिक चर्च वहां हैं। उनको धर्म क्या सिखलाएगा? वहां कई देश हैं जो बहुत निर्धन हैं। इससे प्रकट होता है कि कुबेर भी उस देश पर रुष्ट है। प्राय: निर्धन लोग धार्मिक होते हैं, लेकिन वहां ऐसा नहीं है।

उन्हें यह समझना होगा कि उनकी समस्याएं उनके भीतर हैं, हमारे विशुद्धि चक्र में। हमें अपने विशुद्धि चक्र को सही रखना है। इसके दो पक्ष हैं। दायी विशुद्धि हमें धर्म बताती है, इसे हम आक्रामक पक्ष भी कह सकते हैं। यह लोग जो आक्रामक तरीके से बात करते हैं, जिससे दूसरों पर

उनका रोब रहे, यह लोग दाई पक्षीय हैं जैसे नौकर यदि चोरी करता है और आप उसे बताते हैं। उस समय वह इतना असभ्य हो जाएगा कि आप हैरान होंगे कि उसने चोरी की है फिर भी निडरता पूर्वक उलट कर जवाब देता है। दाई पक्षीय लोग पर्दा डाल सकते हैं और किसी भी बात को अपनी बातों से सही सिद्ध कर सकते हैं। यह वार्तालाप काफी आक्रामक और भड़कीला हो सकता है कि आप हैरान रह जाते हैं और आपको उस पर विश्वास करना पड़ जाता है। इस तरह से हम साधारण मनुष्य इस तरह की बेमतलब बातों में लिप्त रहते हैं और बातों से ही उन्हें सिद्ध करने की चेष्टा और उन्हें तोड़ते-मरोड़ते रहते हैं। लेकिन वह लोग यह कभी नहीं सोचते कि जो नुकसान आप पहुंचा चुके हैं उसे भुलाया नहीं जा सकता और आपकी इस तरह की बातों से तो श्री कृष्ण कुछ भी नहीं भूलेगा। जब आप अपनी चीजों को सिद्ध करते रहेंगे, तर्क करते रहेंगे तो आपको इतनी बड़ी सजा मिलेगी कि आपके लिए उससे उभरना कठिन हो जायेगा। शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक हर तरीके से आप दंडित होंगे। दाई विशुद्धि पर हमें ऐसा स्वभाव, शैली संस्कृति एवं आचरण अपनाना होगा जिसमें श्री कृष्ण जी के माधुर्य गुण हो। हमें इतने मधुर ढंग से बात करनी चाहिए कि सुनने वाले को लगे कि वह श्री कृष्ण की बाँसुरी को सुन रहा है। सहजयोगी की वाणी मधुर होनी चाहिए। यह आक्रामक, व्यंग्यात्मक या किसी के दिल को दुखाने वाली नहीं होनी चाहिए। दूसरे के दिल को दुखाने वाला कोई भी शब्द सही प्रकार की दाई विशुद्धि से कभी भी नहीं निकल सकता। किसी भी प्रकार से किसी को दुखाना नहीं चाहिए। मैं सभी सहजयोगियों से आशा करूंगी कि वह श्री कृष्ण जैसा वाणी माधुर्य प्राप्त करें क्योंकि उनकी विशुद्धि जागृत हो चुकी है। आपके व्यवहार में बहुत से भाव हैं जिनके द्वारा आप अपना माधुर्य प्रकट कर सकते हैं। इटली के लोग अपने हाथों का बहुत प्रयोग करते हैं। हाथों का प्रयोग भी इस तरह से करें कि उससे माधुर्य झलके। रूस और पूर्वी भाग में मेरे प्रति उनका प्यार उनकी आंखों से देखा जा सकता था। हर चीज, चेहरा, आंखें, हाथ, अश्रु यह सब कुछ श्री कृष्ण से संबंधित है। आप अपने स्वभाव को तथा गुस्से को अपनी आंखों से दिखा सकते हैं। कई लोग अपनी आंखों का प्रयोग दूसरों को वश में करने तथा दूसरों की भर्त्सना करने के लिए करते हैं। अपने स्वभाव में भी हमें मधुरता लानी है। यह शक्ति मधुरता तथा सुस्वरता में है। सम्पर्क इतना मधुर होना चाहिए कि वह एक अदभुत खुशी और प्रसन्नता पैदा कर सके। आप हरियाली पर अपनी दृष्टि रखने की चेष्टा करें, वह आपको शांति देगी तथा आपमें शांति प्रदान करने का गुण विकसित हो जाएगा। जब आप दूसरों से बात करें तो उन्हें भी शांति देने की चेष्टा करें। व्यक्ति अवश्य पिघलेगा। यदि आप उससे तर्क करेंगे, झगड़ा करेंगे तो द्रवित होने के स्थान पर वह भड़क उठेगा।

दूसरी बात जो श्री कृष्ण में थी और जिसे हम अपनी दाई विशुद्धि से प्रकट कर सकते हैं वह है व्यवहार कुशलता। व्यवहार कुशलता दो प्रकार की है। एक वास्तविक तथा दूसरी बनावटी। वास्तविक व्यवहार कुशलता के लिए न तो आपको कोई विशेष मानदंडों की जरूरत है और न ही पुस्तकें पढ़ने की। सभी कुछ स्वाभाविक ढंग से बड़ी मधुरता से कार्य करता है। यह केवल तभी संभव है जब आप क्रोध न करें। हमें लोगों को पिघलाना है। बुद्धि या क्रोध से दूसरों को कायल करना व्यवहार कुशलता नहीं है। अपनी अच्छाई, मीठी वाणी तथा क्षमा शील स्वभाव से दूसरों को द्रवित करना व्यवहार कुशलता है। यह गुण श्री कृष्ण में थे। कुछ लोग इससे प्रभावित हुए और कुछ नहीं हुए। पर श्री कृष्ण ने इसे अपनी असफलता नहीं माना। यह तो दूसरे व्यक्ति की प्रतिक्रिया है। मैं आशा करती हूं कि अमरीकी इस गुण को अपनाने की चेष्टा करेंगे तथा एक दूसरे से संबंध सुधारने का प्रयास करेंगे। वहां के लोग तब तक आपके साथ मित्र जैसा व्यवहार करते हैं जब तक आप उनके लिए कुछ करते रहते हैं परन्तु जब आप उनसे प्रतिकार में कुछ चाहें तो उनके लिए कठिन हो जाता है। माधुर्य से आप किसी का शोषण नहीं कर रहे बल्कि माधुर्य से आप किसी को उस स्तर तक ला रहे हैं जहां वह समझ सके कि अच्छाई क्या है?

दक्षिणी अमरीका के लोग बिलकुल सीधे-सीधे, भोले तथा निर्धन हैं। परन्तु काला जादू वहां पैठ चुका है। वह इस चीज को अनुभव करने लगे हैं कि यह काला जादू है तथा उसके लिए अपने को अपराधी मानते हैं। उनके व्यवहार से झलकता है कि जैसे उन्होंने कुछ गलत किया है। वह नहीं जानते कि अपने को कैसे सही करें। हमारे लिए यह आवश्यक है कि हम उनकी अपराध भावना को दूर करें। हम सभी सहजयोगी हैं। आखिरकार हम सभी एक आत्मा हैं। आत्मा कभी अपराध नहीं करती। अपराध से हम साक्षी भाव खो देते हैं। हम नहीं सोच सकते कि गलत क्या है और हम अपनी भूलों और गलतियों का सामना नहीं करना चाहते। उदाहरणार्थ कोई आदमी या औरत स्वभाव से

बहुत निर्दयी है। वह समझ जाता है कि वह निर्दयी था और अपनी निर्दयता को बुरा मान कर वह त्याग देता है। परन्तु वह इस भावना का सामना नहीं करता। सामना करने का मतलब है कि वह जाने कि वह निर्दयी क्यों था और उसे निर्दयी नहीं होना चाहिए था और अब वह और निर्दयी नहीं बनेगा।

रूस में इससे अलग है। वह कभी भी अपने को गलत नहीं कहते। वह कहते हैं कि समय व्यतीत हो गया है, अब हम परमात्मा के साम्राज्य में हैं, जीवन का आनन्द उठाएं। वह अपने भूत काल की बात नहीं करते, वह कोई संबंध नहीं रखते। इससे ऊपर हैं। हमें चिंता किस बात की। वह अपनी समस्याओं आदि के बारे में कुछ नहीं जानना चाहते। वह जानते हैं कि उनकी समस्याएं सुलझ जायेंगी। वह अब आत्मा को समझ गए हैं। वह सहजयोग को समझने का बिलकुल सीधा रास्ता है। लेकिन मैंने ऐसे लोग देखे हैं जिन्होंने मेरे सामने दस पृष्ठ लिखकर अपने पाप स्वीकार किए हैं। पाप स्वीकार करने की कोई जरूरत नहीं और न ही अपनी गलतियों का अवलोकन करने की। आज जो आपके पास है उसका आनन्द उठाएं। यह भिखारी की तरह है जिसे राजा बना दिया गया हो। उसे चाहिए कि राज्य भोगे और राजा की तरह आचरण करे। यदि वह आज भी अपने भूतकाल को याद रखे तो वह हर राह गुजर से भीख मांगेगा। आप जब एक बार भगवान के सा ग्ज्य में आ जाएं तो जान लें कि आप भगवान के साम्राज्य में हैं। लेकिन यह काले जादू का धंधा बहुत ही खतरनाक है तथा यह किसी के भी द्वारा आपके भीतर प्रवेश कर सकते हैं, आपके संबंधी या मित्र द्वारा। आपको बिल्कुल सावधान रहना है कि आपको काले जादू के सम्मुख दुर्बल नहीं होना अपनी दोष भावना के कारण। यह आपको बर्बाद कर सकता। आपके परिवार को बर्बाद कर सकता है। आप सहजयोगी है तब भी यह आपको बर्बाद कर सकता है। आप कभी अपराध भाव के शिकार न हों। कोई आप में अपराध भावना भरे, कोई व्यक्ति आपको बुरा कहे तो भी। वह अपने विचार आप पर थोपता है जिससे आप सोचना शुरू कर देते हैं कि आपको यह करना चाहिए था, यह मैंने गलत किया। यहीं से अपराध भावना आरंभ हो जाती है। बावजूद उस व्यक्ति के लिए कुछ करने के या यह सोचने के कि यह सब बकवास है, वह बुरा अनुभव करने लगता है तथा अचानक ही अपने को किसी परेशानी से घिरा पाता है जो काले जादू से प्रभावित होती है। हर किसी को यह भूल जाना चाहिए। यह जानना चाहिए कि आप भगवान के साम्राज्य में रह रहे हैं।

श्री कृष्ण का मुख्य कार्य हमारे मस्तिष्क द्वारा होता है जो विराट है। शिव हमारे हृदय द्वारा कार्य करते हैं। आत्म साक्षात्कार होने पर मस्तिष्क सूक्ष्मता तथा ज्ञान प्रकट होने लगता है, उसकी अभिव्यक्ति होने लगती है। सबसे बड़ी चीज जो घटित होती है वह है कि आपका मस्तिष्क सुस्वस्थ हो जाता है। यह नहीं है कि आपका मस्तिष्क कुछ और चाहता है और आपका हृदय कुछ और। जब यह एकरुपता पैदा हो जाती है तो धार्मिक जीवन व्यतीत करना बहुत ही आसान हो जाता है। बिना कुछ पढे और सोचे आप सहज में ही धार्मिक बन जाते हैं क्योंकि आपका मस्तिष्क जो प्रायः तर्क के लिए, गलत को सही साबित करने में प्रयोग होता था अब धार्मिक तथा दैविक बन गया है। श्री कृष्ण ने सबसे बड़ी बात जो आप में पैदा की है वह है कि आपका मस्तिष्क अपने आप धार्मिक बन गया है। यह धर्म को जानने का, धार्मिक जीवन व्यतीत करने का और धर्म पर दृढ़ता पूर्वक डटे रहने का एक साधन बन गया है। यह मस्तिष्क है जो काले जादू के प्रभाव से आपको वास्तव में दूर ले गया है। जब एक बार आपका सहस्रार खुल जाता है तो विराट प्रकट हो जाता है और आप अपने ऊपर आश्चर्य चकित हो जाते हैं। जो हर चीज की सोच में उलझ रहा था, "यह खुशी है", "यह मेरा अधिकार है", "मैंने यह किया", "मुझे कौन बता सकता है।" और अचानक आप साधु बन जाते हैं। श्री कृष्ण का बहुत बड़ा आशीर्वाद यह है कि वे विराट हैं। विराट आपका मस्तिष्क है और भगवान सर्वशक्तिमान का मस्तिष्क भी विराट है। साक्षात्कार के बाद मनुष्य की प्रवृत्ति सृजनात्मक बन जाती है और यदि ऐसा नहीं होता तो आप सहजयोगी नहीं है। सृजनात्मकता तथा धार्मिकता को समझना हमारे लिए बहुत आवश्यक है। मेरा मस्तिष्क कहां जा रहा है। या वह विपरीत जा रहा है और जो कुछ है उससे अलग बता रहा है। हमें इस पर केवल अपनी दृष्टि रखनी है और हम यह देख कर अचम्भित रह जायेंगे कि आपके मस्तिष्क ने कैसे अपना रास्ता बदल लिया। यदि आप हर रोज ध्यान करें और अपनी ओर देखें कि आपके सहस्रार की अभिव्यक्ति आपके जीवन में कैसे व्याप्त हो कर कार्य कर रही है। यह आप बहुत आसानी से प्राप्त कर सकते हैं। तब सहजयोगी की सारी शक्तियों की अभिव्यक्ति हो जाएगी और आपको अपने ऊपर कोई संशय नहीं रह जाएगा और अन्य लोग भी आप पर सन्देह न कर सकेंगे।

परमात्मा आपको आशीष दें।

श्री गणेश पूजा

कबेला, इटली 19, सितम्बर 1993

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी जी का प्रवचन (सारांश)

हम सब यहां श्री गणेश की पूजा के लिए एकत्रित हुए है। श्री गणेश प्रथम देवता है जिनका आदि शक्ति ने सृजन किया। यह आवश्यक था कि सर्वप्रथम सिद्धान्तों के देवता का सृजन हो। मानव स्तर तक आज तक जो भी सृजित हुआ है वह शक्ति की रोपण प्रक्रिया द्वारा हुआ। इसके बिना कुछ भी सृजन न हो पाता। द्रव्य को जब आप ध्यान से देखते हैं तो कहते हैं: सल्फा-डाय-ओक्साइड और फिर सल्फा और ओक्साइड अणु की सूक्ष्मता तक आप इसका अध्ययन करते हैं। सल्फर और ऑक्सीजन के इन अणुओं को देखने पर आप पाते हैं कि यह कण एक आवृत्ति के साथ दोलित होते हैं। तीन प्रकार की आवृत्ति प्रयोग की जाती है।

सोचें, कि पदार्थ के अणु में एक शक्ति है जो कार्य करती है। कोई यह भी कह सकता है कि पदार्थ में शक्ति क्यों है? यदि पदार्थ में शक्ति नहीं थी तो सभी रासायनिक मिश्रण आप कैसे बना पाए? कौन इन्हें धकेलता है? कहिए सोडियम क्लोराइड। सोडियम और क्लोराइड परस्पर जुड़े है परन्तु जब क्लोराइड को किसी अन्य परमाणु में जाना पड़ता है तो कौन यह कार्य करता है? यहां अवश्य ही कोई शक्ति है जो पदार्थ में पहले से ही पूर्णतः विद्यमान रहती है। हम जानते हैं कि पानी में एक शक्ति है परन्तु पत्थर में, सोने में तथा जिन 2 पदार्थों में शक्ति है उन सब में तरलता क्यों नहीं? यह सब श्री गणेश के सिद्धान्तों से नियन्त्रित किए जाते हैं। इतना नन्हा सा बालक और काम कितने बड़े-बड़े हैं, उसके तथा कितने काम उसे करने पड़ते हैं। पदार्थों से ले कर सजीव पौधों में, पशुओं और फिर मनुष्यों में, सभी जगह उसकी शक्ति कार्य करती है।

पदार्थों के स्तर तक हम इसे विद्युत चुम्बकीय कह सकते हैं। सम्भवतः यह गणेश जी की शक्ति है जो उस स्तर पर विद्युत चुम्बकीय है जब यह बढ़ने तथा विकसित होने लगती है। इस प्रकार विकास के भिन्न स्तरों पर हमें ऊर्जा के भिन्न संस्तर मिलते हैं।

मानव में वे (श्री गणेश) मंगलमयता, पवित्रता तथा अबोधिता के रूप में विद्यमान हैं। अबोधिता की शक्ति ऐसी पथ प्रदर्शक है। अज्ञानता तथा अबोधिता में अन्तर है। यदि आप अबोध हैं तो आपके लिए प्रेम के अतिरिक्त कुछ भी महत्वपूर्ण नहीं। बन्धन एवं अहं रहित तथा-कथित अपरिपक्व व्यक्ति के लिए प्रेम ही महत्वपूर्ण है। यह वैभव, सत्ता या किसी अन्य चीज की चिन्ता नहीं करता। वह प्रेम को ही महसूस कर सकता है, किसी के शुद्ध प्रेम को। अबोध व्यक्ति को प्रेम से लाभ उठाने की समझ नहीं होती। वह या तो प्राप्त करता है या देता है। बाकी बातों की उसे कोई समझ नहीं है। अबोधिता ही सारे धर्मों का आधार है। बिना अबोधिता के आप धर्मानुसरण नहीं कर सकते क्योंकि अबोधिता-विहीन अवस्था में यदि आप धार्मिक है तो यह बौद्धिक या अहंकार मय दृष्टिकोण हो सकता है, किसी धर्म में पैदा होने या किसी के बताने पर भी ऐसा दृष्टिकोण हो सकता है। यह मात्र छिछला हो सकता है। अबोधिता के गुण से परिपूर्ण हुए बिना धर्म अर्थहीन है। अबोध अवस्था में ही आप धार्मिक है। विचारों तथा परिणाम निकालने से आप ऊपर हैं। आप अधार्मिक नहीं हो सकते। जैसे कि सच्चरित्र ही अबोधिता की अभिव्यक्ति हो। एक बार जब श्री गणेश जागृत हो जाते हैं तथा आप उनका सम्मान करने लगते हैं तो स्वतः ही नैतिकता विकसित हो जाती है। आज्ञा चक्र की पिछली ओर को श्री गणेश प्रकाशित करते हैं तथा आगे ईसा मसीह जो कि श्री गणेश का ही अवतरण थे। पश्चिमी मस्तिष्क के लिए यह समझ पाना बहुत कठिन है कि ईसा मसीह एक आत्मा थे। उन्होंने उनके विरूद्ध भयंकर बातें कहीं और उनकी आलोचना की। किसी भी तरह ईसा ने उन्हें क्षमा कर दिया।

श्री गणेश के विषय में एक और बात है कि वह अपनी माता की पूजा करते हैं। मातृत्व बहुत ही महत्वपूर्ण है।

पारिवारिक जीवन तथा समाज के मुख्य आधार के रूप में, महिलाओं, पुरुषों तथा बच्चों में भी, मातृत्व को स्वीकार करना होगा। मनुष्य के सामान्य जीवन में सीधे-सादे अबोध व्यक्ति मातृत्व की धुरी पर ही घूमते रहते हैं। परन्तु माताओं को माताएँ ही रहना है। श्री गणेश अपनी माता के प्रति पूर्ण समर्पित हैं और वह जानते हैं कि उनकी माता आदि शक्ति है। वह किसी और को नहीं जानते। सहजयोग में यह अति आवश्यक है। यहां जो अनैतिक लोग हैं और अनैतिक कार्य करते हैं, वह आदि शक्ति के विरुद्ध पाप कर रहे हैं। श्री गणेश के विरुद्ध पाप क्षम्य है परन्तु आदि शक्ति के विरुद्ध पाप करने पर अन्नतः श्री गणेश दण्डित करते हैं। आदि शक्ति किसी को दण्ड नहीं देती, देवता उन्हें दण्डित करते हैं।

प्रथम और मुख्य बात यह समझ लेनी चाहिए कि निष्कपटता का सम्मान और उसकी भली प्रकार से देखभाल तथा पोषण और सुरक्षा होनी चाहिए। इसीलिए मैं बच्चों के विषय में सख्त हूँ। बच्चों का समाचार पत्रों में अनावरण नहीं होना चाहिए। विज्ञापनों आदि के लिए हमें बच्चों के फोटो नहीं लेने चाहिए। छोटे-छोटे मार्गों से अपने बच्चों का प्रदर्शन करके पैसा कमाना एक बहुत ही गलत विचार है। इस प्रकार तो हम निष्कपटता बेच रहे हैं जो कि अमूल्य है और जो बच्चों में दैवी रूप से विद्यमान है। मैं बहुत से ऐसे बच्चों को जानती हूँ, जिन्हें विज्ञापित किया गया और जो मर गए। हमें अपने बच्चों की देखभाल बहुत सतर्कता से करनी चाहिए लेकिन हम सीमाएं लांघ जाते हैं। कुछ लोग अपने ही बच्चों की चिन्ता करते हैं और उन्हें यदि जरा सा भी कुछ हो जाए तो परेशान हो जाते हैं। इसका तात्पर्य यह कि आप बच्चे का सम्मान इसलिए कर रहे हैं कि वह आपका अपना बच्चा है परन्तु यदि आप बच्चे का सम्मान इसलिए करते हैं कि वह निष्कपटता की प्रतिमूर्ति है तो आपको प्रत्येक बच्चे का सम्मान करना होगा तथा समझना होगा कि वह क्या बोलते हैं, क्या बातें करते हैं और वह किस प्रकार के व्यवहार करते हैं। आप सौभाग्यशाली हैं कि आपके जन्मजात आत्म साक्षात्कारी बच्चे प्राप्त हुए हैं। यह एक बहुत बड़ी बात है, एक आर्शीवाद है। आपको उनकी निष्कपटता देखनी है। एक बच्चे के पिता को हस्पताल ले जाया गया। उसने बहुत निष्कपटता से कहा कि वहां ये कैसे स्वस्थ्य होंगे क्योंकि वहां तो कोई सहजयोगी नहीं है। वे उनके चक्रों को कैसे ठीक करेंगे? इन्हें मां के पास ले जाओ। बच्चे उचित कारण को देखते हैं क्योंकि अबोधिता उन्हें शुद्ध चित्त प्रदान करती है। आपका चित्त भी हर चीज़ संगीत कला आदि के लिए शुद्ध होना चाहिए। यह सब आपको निष्कपटता से प्राप्त होता है। उदाहरणार्थ :– यदि कोई कलाकार बहुत धनलोलुप हो तो उसकी कला शाश्वत नहीं हो सकती। तभी तो हम देखते हैं कि जो भी कला जन्म लेती है, वह आते ही लोप हो जाती है। उसका जीवन निरन्तर नहीं है। यही बात आधुनिक संगीत के साथ है। क्योंकि उसके पीछे भी धन लोलुपता है। परिणामतः यह पूर्ण कृति नहीं हो सकती।

प्राचीन काल में जो कृतियाँ भगवान को समर्पित की गयीं, उन सबका आज भी सम्मान होता है। उस समय भले ही कलाकार संकट में रहा हो परन्तु वह भली भांति समझता था कि यदि उसे कोई अभिव्यक्ति करनी है तो ईमानदारी से करनी है। लोगों को प्रसन्न करने के लिए नहीं अपितु परमात्मा को प्रसन्न करने के लिए। सभी वास्तविक कलाकार सच्चाई के लिए लड़ते आ रहे हैं।

निष्कपटता आपको आत्म निरीक्षण की शक्ति भी प्रदान करती है। आप जानते हैं कि आप कहाँ खड़े हैं। एक निष्कपट प्राणी भली भांति जानता है कि वह नैतिकता के आधार पर खड़ा है। उसे बेकार की उन सभी चीजों को नहीं अपनाना चाहिए जिनका फैशन और प्रचलन हो। हम किस लिए अपनी निष्कपटता का बलिदान कर रहे हैं? हमारा उद्देश्य क्या है? हो सकता है कुछ लोग बहुत होशियार हों और वह उसका प्रदर्शन कर रहे हों। ऐसे लोगों का कोई सम्मान नहीं करता। लोगों की निष्कपटता पर बहुत बड़ा आक्रमण है। सब से पहले यह बच्चों पर आता है जैसे उन्हें गाली देना। यह केवल इसलिए कि वह निष्कपटता को समाप्त कर देना चाहते हैं। शायद जो लोग यह करते हैं उनमें निष्कपटता नहीं होती और वह बच्चों में भी इसे रहने देना नहीं चाहते। यह बहुत प्रचलित और फैशन में आ रहा है तथा यह अवश्य ही निष्कपटता पर सीधा प्रहार है। यह केवल बच्चों पर ही नहीं बल्कि उन लोगों पर भी है जो निष्कपट हैं। जो जानबूझ कर हर प्रकार की अपराधवृति तथा पापवृति से ग्रस्त हैं वह कभी भी निष्कपटता की रक्षा नहीं करेंगे क्योंकि वह सोचते हैं कि वह जो कर रहे हैं वही सब से बढ़िया है। अबोधिता पर कई तरीकों से प्रहार हो रहे हैं। यदि आपके बच्चे सही ढंग से चल रहे हैं, ठीक तरह से पढ़ रहे हैं तो कोई न कोई उन्हें काबू में लाना चाहेगा। यदि कोई निष्कपट प्राणी हुआ तो उसे वह परेशानी में डालना चाहेंगे। निष्कपटता अपने आप में एक ऐसी शक्ति है जो

लोगों के घृणा भाव और निन्दात्मक स्वभाव को ललकारती है।

सर्वप्रथम हमें देखना है कि हमारे बन्धन किस प्रकार हमारी अबोधिता को काबू करते हैं। बन्धन आपको अत्यन्त कर्मकाण्डी बना देते हैं। सहजयोग में भी बहुत से लोग कर्मकाण्डी हैं। कर्मकाण्ड इस तरह का कि यदि आपको कोई बात तीन बार कहनी है तो आप तीन बार ही कहेंगे। लोग बहुत बन्धन युक्त हैं। कुछ सहजयोगी जो भूतबाधा ग्रस्त हैं, मुझ से कांपते हैं। मैं आप सब से प्रेम करती हूँ। मुझ से अधिक नम्र गुरू कोई और आपको नहीं मिलेगा। यदि आप उन्हें देखें तो वह कभी मुस्कराएंगे नहीं, वह डर जाएंगे। आपने क्या गलती की है? आप सहजयोगी बन चुके हैं। बहुत ही कर्मकाण्डी हैं। प्रत्येक व्यक्ति को कर्मकाण्ड और आचार संहिता में अन्तर जान लेना चाहिए। एक निष्कपट बालक आचार संहिता जानता है।

निष्कपट बच्चों की पूजा कर्मकाण्डी नहीं होती। यह हृदयगत होती है। कैसे पूजा करनी है, कैसे प्यार जताना है। जो प्राणी अति कर्मकाण्डी है वह दूसरे प्राणी को पीट भी सकता है। आपको इसमें काफूर नहीं डालना था। खुले हृदय तथा अबोधिता से किये गये कार्य में कोई गलती नहीं होती। अब आप परमात्मा के साम्राज्य में हैं जहां कोई कानून और कायदा नहीं है जिसमें कर्मकाण्ड की जरूरत पड़े। लेकिन हर काम के दो ढंग हैं। जब मैं कहती हूँ कि कर्मकाण्डी न बनें मैं एक आश्रम में गई और देखा कि वहाँ की हर वस्तु सुअरों के बाड़े की तरह पड़ी थी। आश्रम के नेताओं ने बताया कि सहजयोगियों में आश्रम की सफाई का विवेक नहीं है। यदि यह उनका घर हो तो यह देखभाल करें।

क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि पक्षी साइबेरिया से आस्ट्रेलिया तक सभी मार्गों से जाते हैं। उनका मार्ग दर्शन कौन करता है? यह निष्कपटता है और निष्कपटता एक चुम्बक है। मनुष्यों में इसका इतना अधिक विकास हम नहीं पाते। वह जानते हैं कि पूर्व, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण कौन से हैं। एक छोटी सी मक्खी भी उसी स्थान पर लौटती है जहाँ से वह आती है। मछलियों में भी दिशा ज्ञान है। लेकिन मनुष्य ही इसे भूल सकता है। आप यदि अपने कुत्ते को पाँच मील दूर छोड़ दें, तो भी वह वापिस आ जाएगा। वह कैसे रास्ता जानता है? उनमें जो यह गुण निष्कपटता से बना है वही वास्तव में विद्युत-चुम्बकीय शक्ति है। और प्रेरणा, जिसका मतलब है कि यह विद्युत चुम्बकीय शक्ति गणेश-तत्व से संचारित होती है। पक्षी बहुत ही योजनाबद्ध, स्वच्छ और समझदार हैं परन्तु वह कर्मकाण्डी नहीं है। भगवान ने जो कुछ भी उन्हें दिया है वह उसी में सीमित हैं और अपनी मर्यादा के भीतर ही रहते हैं यदि आप पशुओं की स्थिति को देखें, जो मनुष्यों के सम्पर्क में रहते हैं, वह भी बहुत स्नेही हैं। वह केवल स्नेह चाहते हैं। एक दिन यदि आप अपने कुत्ते की ओर ध्यान न दें तो वह अपना खाना नहीं खाएगा। यह बात असाधारण है। मैंने बच्चों में देखा है कि कैसे वह मात्र प्यार चाहते हैं। वह प्यार के अतिरिक्त कोई वस्तु स्वीकार नहीं करते। लेकिन जैसे-2 वह बड़े होने लगते हैं, विशेष कर भौतिक जगत में, तो सभी भौतिकवाद उनमें आ जाता है।

बच्चों की निष्कपटता को समाप्त करने की दूसरी विधि है उनके मस्तिष्क में भौतिकवादी विचारधारा डालें। बेशक जन्म दिन पर टैडी बियर बेचना एक माध्यम है परन्तु अब हर कोई टैडी बियर खरीद रहा है क्योंकि अभिभावक बच्चों की संगति में रहना नहीं चाहते। वह उन्हें खिलौनों और टी.वी. का साथ दे देते हैं जिससे वह भौतिकवादी बनना आरम्भ हो जाते हैं। वह ऐसी चीज़ों के बारे में पूछना और इच्छा रखना आरम्भ कर देते हैं कि कोई भी चकित रह जाए। एक पश्चिमी बालक को आप बाजार ले जाएं और वहाँ रख कर देखें। लेकिन एक भारतीय बालक को ले जाएं तो वह कोई भी चीज नहीं लेगा। उसे आप धन दें तो वह कोई छोटी सी चीज़ खरीद लेगा। यही भौतिकवाद की सारी परम्परा है जो निष्कपटता को समाप्ति पर ले आई है। तब बच्चा इसी भौतिकवादी परम्परा से बढ़ना आरम्भ हो जाता है। अब वह लोगों को इस तरह आंकना शुरू करता है कि उसके पास कितनी कारें हैं।

मैं बोस्टन गई और वहाँ दूरदर्शन साक्षात्कारी ने मुझ से पूछा कि मेरे पास कितनी रोल्स-रोयल्स हैं? जब मैंने कहा कि एक भी नहीं तो उन्होंने कहा कि हमें आप मे कोई दिलचस्पी नहीं क्योंकि आप व्यवसाय में नहीं है। पश्चिम में प्रौढ़ लोगों के यह दिमाग हैं। लेकिन बच्चों में भी भौतिक वस्तुओं के लिए होड़ लगी है। कुछ समय बाद वहाँ कैसी नस्ल होगी। जब केवल वस्तुओं के बेचने और खरीदने वाले ही होंगे? आपको अपने बच्चों के प्रति सजग रहना है। उन्हें उकसाएं नहीं और न ही उनके लिए अधिक चिन्तित रहें। उन्हें भौतिकवाद के स्तर पर मत रखें। इसके लिए कुछ हट कर कार्य करना पड़ सकता है। परन्तु हमें अपने बच्चों की तथा उनकी निष्कपटता की रक्षा करनी है।

आसपास के समाज की तुलना में सहजयोगी कहीं अधिक अबोध हैं। इस तरह वास्तव में उस ढंग की प्रशंसा करनी पड़ती है जिससे वह इतने अबोध बनें। वह दैविक संगति का मार्ग जानते हैं। यदि यह निष्कपटता फैलती नहीं है तो इसमें जंग लग जाएगा, इसका विकास रूक जाएगा। दूसरों की अपेक्षा इनका I.Q. (बुद्धि कोष्ठ) घट जाएगा क्योंकि दूसरों का I.Q. (बुद्धि कोष्ठ) भौतिकवाद में विकसित हो रहा है। आपका I.Q. (बुद्धि कोष्ठ) तब तक विकसित नहीं होगा जब तक आप उसे आस पास फैलाएंगे नहीं। आप जानते हैं कि कैसे यह सब करना है। यह कुण्डलिनी और श्री गणेश की शक्ति है। वह प्रत्येक चक्र पर आपकी सहायता करती है। वह प्रत्येक विश्व विद्यालय की कुलपति है जहाँ उसे मोहर लगानी पड़ती है। वह हर चक्र पर विद्यमान है परन्तु आपको यह समझना है कि आपने इसे फैलाना है, इसे सामूहिक बनाना है। इसके लिए हमें क्या करना चाहिए? हमें ऐसे कार्यक्रम आयोजित करने का प्रयास करना चाहिए कि लोग आपकी निष्कपटता पर आसक्त हो जाएं। ऐसा करने में आप अपने को निष्कपट रखने की चेष्टा करें। आपको चालाक और तेज नहीं होना चाहिए और न ही अधिक बुद्धिमान क्योंकि आपके मस्तिष्क में भी अहम् के विचार आने का प्रयास कर सकते हैं। यही अच्छा है कि आप अपने को निष्कपट रखें। भीतर का सब कुछ वास्तव में श्री गणेश की शक्ति से संचरित किया जा सकता है। बाह्य जीवन भी निष्कपट हो जाता है। किसी के चतुर और तेज न होने के बावजूद भी सब कुछ घटित होता रहता है उस आन्तरिक शक्ति से जो प्रत्येक प्राणी में विद्यमान है। अतः अपनी आन्तरिक शक्ति पर निर्भर करें तथा बाहर उसकी अभिव्यक्ति करें। आन्तरिक शक्ति श्री गणेश हैं जो सभी में समान रूप से विद्यमान हैं। सारी प्रणाली तथा चक्र आदि सब के भीतर समान रूप से विद्यमान हैं। केवल एक चीज जो हमें ध्यान रखनी है वह है अपनी निष्कपटता को फैशन आदि जैसी व्यर्थ की सांसारिक वस्तुओं से परे रखना। तत्काल आप पाएंगे कि आप का अस्तित्व व्यक्त हो गया। जरा एक साधारण सी बात सोचें। मैं एक भारतीय हूँ, मुझे कोई नहीं जानता लेकिन जहाँ कहीं भी मैं हूँ, अपनी सभाओं में कम से कम पाँच से छः हजार श्रोताओं को पाती हूँ। मुझ में इतनी क्या विशेषता है? हम सहजयोगी हैं। हम सन्त हैं। हमें प्रत्येक के साथ सन्तों जैसी बात ही करनी है। हमें सन्तों की भाँति ही विश्वास रखना है। किसी को यह कभी भी नहीं समझने देना कि हम चतुर हैं और किसी से किसी और चीज की चाहत रखते हैं। एक बार यदि आपकी निष्कपटता प्रकट हो गई तो सभी देवी देवता आपकी सहायता करेंगे। प्रत्येक मनुष्य को यह सोचना है कि किस प्रकार हम सहजयोग फैला रहे हैं।

हमें वह सभी ढंग तथा मार्ग अपनाने हैं जो एक सन्त के लिए अपेक्षित हैं न कि एक राजनीतिज्ञ और नायक की भाँति। सन्तता का सम्मान प्रत्येक दशा में होता है। आपकी सादगी और निष्कपटता इसमें सहायता करती है, ऐसा इसका प्रभाव है। विग्रह एक ऐसा व्यक्तित्व है जिसमें सहनिपुणता है। एक प्राणी जो निष्कपट है उसे सहनिपुणता इतनी अधिक मिलेगी कि वह किसी को भी लुभा सकता है। किसी को धन के लिए अधिक चिन्तित नहीं होना चाहिए और न ही प्रत्येक वस्तु की गणना करनी चाहिए और न ही भोजन के लिए चिन्ता। यह सब करना है परन्तु निष्कपटता से। आप कहाँ सोते हैं। क्या करें। यह सन्तों के लिए जरूरी नहीं है। यह एक ढंग है जिसमें प्राणी को रहना है क्योंकि उसका पोषक बिन्दु निष्कपटता है। वह लोगों पर चिल्लाता नहीं, क्रोधित नहीं होता। बेशक उसे ईसा की तरह भूतों पर चिल्लाना पड़ सकता है। वैसे वह एक शान्ति-प्रिय, प्रसन्न, हंसमुख और विनोदप्रिय व्यक्ति है।

आज मैं इस पूजा पर आप सभी को श्री गणेश में विद्यमान सभी गुणों का आशीर्वाद देती हूँ केवल उनके क्रोध के अतिरिक्त।

"भगवान आपको आशीर्वादित करें।"

परमपूज्य श्री माता जी निर्मला देवी जी का रूस में सम्वाद्दाताओं से साक्षात्कार (सारांश)

परम पूज्य माता जी श्री निर्मला देवी के सेंट पीटर्जबर्ग, रूस, की पैट्रोवस्क्या विज्ञान एवं कला अकादमी में विशेष सम्मान समारोह के अवसर पर श्रीमाता जी का विज्ञान के डाक्टर प्रोफेसर यू.ए. वोरोनोव के साथ साक्षात्कार 13 नवम्बर, 1993।

विश्वशान्ति को प्रोत्साहन देने के विशिष्ट कार्य के लिए पैट्रोवस्क्या विज्ञान एवं कला अकादमी ने श्री माता जी को अकादमी के 'अवैतनिक सदस्य' पद से सम्मानित किया। अभी तक अकादमी ने केवल दस व्यक्तियों को यह सम्मान दिया है। इनमें से एक अलबर्ट आइनस्टाइन को दिया गया था। पर श्री माता जी के कार्य को सभी वैज्ञानिक आविष्कारों से कहीं अधिक महत्व पूर्ण एवं व्यापक माना गया। प्रोफेसर वोरोनोव ने कहा कि सहज योग द्वारा प्राप्त की गई अवस्था तक विज्ञान को अभी पहुँचना है। अत्यन्त कृपा करके श्री माता जी ने सम्मान को स्वीकार किया।

अबोधिता के स्वामी श्री गणेश के विषय में बात करते हुए श्री माता जी ने वार्ता आरम्भ की और कहा कि श्री गणेश निरन्तर शिशु हैं तथा पवित्रता, अबोधिता एवं मंगलमयता के प्रतीक हैं। वे ही बाद में ईसा के रूप में अवतरित हुए। उन्होंने बताया कि श्री गणेश को हाथी का सिर प्राप्त होने की मनोरंजन कहानी है। ध्यान अवस्था में मूलाधार पर लोगों ने उनके प्रतीक चिन्ह (स्वास्तिक) को देखा है। पर स्वयं श्री माता जी ने वैज्ञानिकों को बताया कि किस प्रकार कार्बन के अणुओं से बने मूलाधार पर श्री गणेश विराजमान हैं। कार्बन के सृजन के बाद ही आर्गेनिक कैमिस्टरी आई (और बाद में अमीनो – एसिड आए)।

तब श्री माता जी ने बताया कि किस प्रकार उनके मार्ग दर्शन में वैज्ञानिकों ने चार (वैकेन्सीज) संयोजकताओं वाले कार्बन के अणुओं के फोटो लिए। उन्होंने बताया कि बाई ओर से जब उसकी दाई ओर का फोटो लिया गया तो ''ओंकार'' नजर आया, यही 'आदि शब्द' हैं। दाई ओर से जब उन्होंने इसकी बाई ओर का फोटो लिया तो उन्हें स्वास्तिक नजर आया क्योंकि संयोजकताएं (वैलेन्सीज) उसी प्रकार गतिशील हैं। जब उन्होंने नीचे से ऊपर के फोटो लिए तो अल्फा और ओमेगा के अक्षर नज़र आए। श्री माता जी ने बताया कि जब श्री ईसा ने कहा था कि मैं ''अल्फा एवं ओमेगा'' हूँ – तो उनका यही अभिप्राय था।

इसके बाद श्री माता जी ने आत्मा के बारे में बताया जिसे आत्म साक्षात्कार के बाद आप आकाश में देख सकते हैं। ये आत्माएं लम्बे रिब्बन के आकार में लटकी हुई दिखाई पड़ती हैं, ये मरे हुए लोगों की आत्माएं हैं। वैज्ञानिकों ने खोज निकाला है कि कोषाणुओं में अभिग्राहक (रिसैप्टर) होते हैं। श्री माता जी ने कहा कि हर कोषाणु में अभिग्राहक है और बताया कि आत्मा पीछे की ओर बैठती है और हर सैल के ऊपर यह रिमोट कंट्रोल की तरह बैठती है। अब वैज्ञानिकों ने इस आत्मा को खोज निकाला है जिसके बारे में श्री माता जी ने बहुत समय पूर्व बताया था कि किस प्रकार वे मृत आत्माओं से प्रभावित हैं तथा किस प्रकार आत्मा भूत बाधा में फंस जाती है और गुणसूत्र (क्रोमोसोम) में जीन्स पर प्रतिबिम्बित होती है और इस प्रकार रिमोट कंट्रोल द्वारा कोषाणुओं को प्रभावित करती है।

विश्व नैरोलोजी अधिकारी, जो कि सूत्र युग्मन (सिनैप्स) एवमं स्नायुविशेषज्ञ था, से बात करते हुए श्री माता जी ने मनुष्यों में मिले चेतना के चार अन्य क्षेत्रों के बारे में बताया :

(1) **चेतना** – जो हमारे अन्दर वर्तमान है।

(2) **अवचेतन** – अपने अन्दर वह सब समेटे हुए है जो कि हमारे अन्दर भूतकाल है तथा इस जीवन के भूतकाल, पिछले जीवनों के भूतकाल तथा सामूहिक अवचेतना, जिसके अन्दर हमारे सृजन से लेकर अभी तक का सब कुछ मृत निहित है। सभी बैक्टीरिया, वायरस, मृत आत्माएं, भूत बाधाएं आदि इस क्षेत्र में रहती हैं। अवचेतन क्षेत्र हमारे बाएं अनुकम्पी नाड़ीतंत्र (ईड़ा नाड़ी) के बाई ओर स्थित है। इसलिए हमारा चित बाई ओर को चला जाता है तो हम भिन्न प्रकार के मनोदैहिक रोगों की पकड़ में आ जाते हैं जैसे कैंसर, एड्स तथा माँसपेशियों, मेरुरज्जु (रीढ़) शोथ (सूजन) आदि। बाई ओर की प्रवृत्ति वाले लोग सदा रोते

रहते हैं, बिलखते रहते हैं तथा बीते समय के बारे में सोचते रहते हैं। ऐसे लोगों पर इस प्रकार के मनोदैहिक रोगों का प्रकोप हो सकता है। एक छोटे स्तर पर ऐसे लोगों को गठिया रोग एवं ग्लानि के दौरे पड़ सकते हैं। मिर्गी रोग भूत बाधा के कारण होता है और इसका इलाज सुगमता से हो सकता है। भारत में एक इसका इलाज सुगमता से हो सकता है। भारत में एक डाक्टर ने सहजयोग से मिर्गी के ईलाज पर एम.डी. प्राप्त की है।

(3) **पराचेतन (सुप्राकानशियस)** – वह हमारे अन्दर भविष्यकाल है। यह क्षेत्र हमारे दायें अनुकम्पी नाड़ी तंत्र (पिंगला नाड़ी) के दायीं ओर स्थित है। दायीं ओर के झुकाव वाले लोग अत्यंत महत्वाकांक्षी, भविष्यवादी और सदा योजना बनाते रहने वाले होते हैं। मृत्यु के उपरान्त ऐसे लोग इन क्षेत्रों में जाते हैं और अपनी महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने के लिए जीवित आत्माओं पर अधिकार कर लेते हैं। दायीं ओर को झुके लोग, इसलिए, भिन्न प्रकार के शारीरिक एवं मानसिक रोगों के शिकार हो जाते हैं।

दूसरे चक्र, स्वाधिष्ठान, द्वारा पोषित जिगर तथा अन्य अंगों के बारे में श्री माता जी ने विस्तार पूर्वक बताया। उन्होंने बताया कि किस प्रकार इस चक्र के बहुत से कार्य करने पड़ते हैं। सोचने के लिए हमें बहुत सी ऊर्जा की आवश्यकता पड़ती है। मस्तिष्क के कोषाणुओं को यह ऊर्जा पहुँचाने का महत्वपूर्ण कार्य भी यह चक्र करता है। भविष्यवादि व्यक्ति, जो सदा योजनाएं बनाते रहते हैं, बहुत सी ऊर्जा उपयोग करते हैं। यह ऊर्जा पहुँचाने के लिए स्वाधिठान चक्र द्वारा घोषित होने वाले अन्य अवयव उपेक्षित हो जाते हैं। जिगर, अग्नाशय, प्लीहा, गुर्दे एवं आंत्र में जाने वाली ऊर्जा अब केवल एक ही कार्य के लिए खर्च होने लगती है।

श्री माता जी ने जिगर के कार्य के महत्व को बताया क्योंकि जिगर को गर्मी के रूप में शरीर के सारे विष को सोखना होता है तथा फिर इस गर्मी के रक्त संचार में डालना होता है। जिगर की उपेक्षा होने पर यह गर्मी इकट्ठी होकर दोनों ओर बहने लगती है।

यह गर्मी जब नीचे की ओर बहने लगती है तो आन्त्र पर इसका कुप्रभाव पड़ता है और व्यक्ति के 'कब्ज' की समस्या हो जाती है। जब इसका प्रभाव गुर्दे पर पड़ता है तो यह इसे जमाने लगती है और कई समस्याएं खड़ी हो जातीं हैं। डाक्टर तब व्यक्ति को डायलिसिज़ पर डाल देते हैं और दिवालिया होकर व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है। जिगर की गर्मी जब ऊपर को चढ़ती है तो इसका कुप्रभाव फेफड़ों पर पड़ता है (जिसे सहजयोग में दायां हृदय कहते हैं) और व्यक्ति के अस्थमा (दमा-रोग) हो जाता है।

स्वाधिष्ठान चक्र की खराबी के कारण होने वाली बीमारियों के बारे आगे बताते हुए श्री माता जी ने मधुमेह का वर्णन किया। श्री माता जी ने कहा कि यह गलत धारणा है कि मधुमेह अधिक मीठा खाने से होती है। मधुमेह रोग का चीनी खाने से कोई सम्बन्ध नहीं। उन्होंने बताया कि किस प्रकार एक सामान्य भारतीय ग्रामीण एक कप चाय में तीन चार चम्मच चीनी पीता है पर उसे मधुमेह रोग नहीं होता और वह सर्व सामान्य जीवन व्यतीत करता है। उन्होंने कहा कि मधुमेह प्रायः अफसरों, राजनीतिज्ञों और विचारकों को होती है क्योंकि शक्कर के खपाने के लिए उत्तरदायी, उनके अग्नाशय की स्वाधिष्ठान चक्र अपेक्षा कर देता है क्योंकि वह उनके थके हुए मस्तिष्क को ऊर्जा पहुचाने के कार्य में व्यस्त होता है।

रक्त कैंसर, जिसे कि सहजयोग के अभ्यास द्वारा ठीक किया जा सकता है, कि बात करते हुए श्री माता जी ने बताया कि शरीर में आपात-स्थितियों को सम्हालने का कार्य प्लीहा का है। परन्तु हमारी उत्तेजना पूर्ण एवं तीव्र जीवन शैली इसे अनियमित कर देती है। इस अवस्था में किसी भी दाएं पक्षीय व्यक्ति पर किसी दुर्घटना या निराशा के रूप में यदि बाई ओर से वायरस का हमला हो जाए तो यह उसे रक्त कैंसर तक पहुँचा सकता है। अचानक दाएं से बाएं के चले जाना, इस रोग का कारण बन सकता है। श्रीमाता जी ने बताया कि ऐसे बहुत से रोगी, जिन्हें चिकित्सा विज्ञान ने 'अवश्यम्भावी मृत्यु' की श्रेणी में डाल दिया था, सहजयोग के अभ्यास से ठीक हो गए हैं।

एक छोटी उम्र का खिलाड़ी, जो अति आक्रामक होने के साथ-साथ मदिरा पीने का आदी भी है तो अचानक उसे इस युवावस्था में ही हृदयात (हार्ट अटैक) हो सकता है तथा उसकी मृत्यु हो सकती है।

स्वाधिष्ठान चक्र की खराबी के कारण एक अन्य भयंकर रोग जो हो सकता है वह है दाई ओर का पक्षघात (मस्तिष्क में बाई ओर)। श्री माता जी ने बताया कि एक बार यदि मूल-भूत बातों को जान लें और व्यक्ति जान पाए कि किस प्रकार चक्र को ठीक किया जाए तो किसी भी रोग को आसानी से ठीक किया जा सकता है।

(4) **उच्च चेतना** – उच्च चेतना मानवीय चेतना से ऊपर है। यह ब्रह्मरन्ध्र के ऊपर के क्षेत्र में स्थित है।

आध्यात्मिक जीवन के लिए बने साक्षरता संस्थान के एक प्रोफैसर से बात करते हुए श्री माता जी ने पुराने रूसी लेखकों की महानता की बात की और बताया कि किस प्रकार उन्होंने अन्तःदर्शन की आदत विकसित करने में योगदान किया और रूसी लोगों में यह आदत पैदा की। अन्तःर्दशन की आदत नें उन्हें सहजयोग के लिए विवेकशील, तैयार एवं परिपक्व बताया है। श्री माता जी ने कहा कि युवावस्था में ही उन्होंने लेओ टॉलस्टाय का हिन्दी अनुवाद पढ़ा और इसका बहुत आनन्द लिया। श्री माता जी की सहायता से एक भारतीय महिला ने हाल ही में 'अन्नाकैरीना' का हिन्दी अनुवाद किया है।

''संस्कृति के माध्यम से शान्ति'' संस्थान के अध्यक्ष से बात करते हुए उन्होंने बताया कि हर चक्र भिन्न देवता से संचालित है तथा अत्यन्त महत्वपूर्ण चक्र 'स्वाधिष्ठान' की अध्यक्ष विद्या की देवी सरस्वती हैं। फिर श्री माता जी ने मात्रेया के बारे में बताया जिसका अर्थ है तीन माताएं – महालक्ष्मी, महासरस्वती और महाकाली और बताया कि किस प्रकार श्री गौतम बुद्ध ने भविष्य में आने वाले बुद्ध की बात की थी और कहा था कि वे 'मात्रेया' के रूप में आयेंगे।

एक उपस्थित व्यक्ति ने तब श्री माता जी को बतायाकि रूसी परम्परा के अनुसार मात्रेया को कआदि शकि (होली घोस्ट) माना जाता है। जब उसने होली घोस्ट का वर्णन पुल्लिंग में किया तो श्री माता जी ने उसकी त्रुटि को सुधारते हुए कहा कि होली घोस्ट पुरुष नहीं है, स्त्री है। वह यूनान की 'अथेना' हैं।

आयोजित धर्म को भयंकर बताते हुए श्री माता जी ने कहा कि आयोजक गण अपने विचार इसमें भरने का प्रयत्न करते हैं। उन्होंने बताया कि परमात्मा और देव आयोजित नहीं किए जा सकते क्योंकि वे मानव मस्तिष्क की पहुँच से बहुत परे हैं।

श्री जीसज़ क्राइस्ट के बारे बताते हुए श्री माता जी ने दृक – तन्त्रिका पर, मस्तिष्क के मध्य में, वह स्थान दिखाया जिसे अगन्य चक्र कहते हैं। उन्होंने बताया कि इस चक्र पर वे ईसा रूप में अवतरित हुए। वे ही साम्राट हैं तथा हर जगह उन्हीं का साम्राज्य है।

श्री माता जी ने कहा कि आत्म साक्षात्कार पाकर आपको सारी शक्तियां मिल जाती हैं। यह प्रेम की शक्ति है जो आपको निडर बनाती है। ईसा मसीह के उदाहरण से उन्होंने प्रेम शक्ति का वर्णन किया किस प्रकार मैरी मैगडेलीन नामक वैश्या, जिसे मृत्यु दण्ड के लिए ले जाया जा रहा था, को देखकर वे द्रवित हो उठे। उन्होंने वैश्या को पत्थर मारने वाले लोगों से कहा कि जिसने कभी पाप नहीं किया हो वो मुझे पत्थर मारें।

शक्ति कई प्रकार की हो सकती है, परन्तु केवल प्रेम शक्ति ही रोग मुक्त कर सकती है। श्री माता जी ने बताया कि किस प्रकार रूस के रासपुतिन के पास भी शक्तियां थीं, परन्तु वे सब आसुरी शक्तियां थीं। उन्होंने बताया कि इसी व्यक्ति ने भारत में रजनीश के रूप में पुर्नजन्म लिया।

तब श्री माता जी ने बताया कि हम सब के अन्दर स्थित कुण्डलिनी, आदिशक्रि (होली घोस्ट) का ही प्रतिबिम्ब है। उन्होंने कहा कि पोप पाल ने होली घोस्ट, जो कि बाइबिल की आदि मां हैं, को हटा कर बहुत बुरा किया है।

अमेरिका की बात करते हुए श्री माता जी ने दुःख व्यक्त करते हुए कहा कि जहां तक अध्यात्मिकता का प्रश्न है तो वहां के लोग अत्यन्त असभ्य हैं और उनमें से अधिकतर मूर्ख हैं। मात्र इतना ही नहीं, बहुत से अमेरिकन झूठे गुरुओं के पीछे दौड़ रहे हैं तथा भौतिक वैभव के आधार पर अपना मूल्यांकन कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि वर्षों पूर्व जब मैंने उन्हें चरित्रहीन जीवन की बुराइयों के बारे में बताया और समझाया कि किस प्रकार वे समलैंगिकता की समस्या से छुटकारा पा सकते है तो उन्होंने मेरी बात पर कोई ध्यान न दिया। यहां तक कि हार्वार्ड-विश्वविद्यालय जैसी चोटी के शैक्षणिक संस्थान ने भी इस प्रकार की असभ्य जीवन शैली की अनुमति दे दी। सब से बुरा तो यह हुआ कि देश के कानून एवं कैथोफ़िक् चर्च ने भी इसकी अनुमति दी।

श्री माता जी ने तब रूस के लोगों को स्पष्ट शब्दों में चेतावनी दी कि वे यह न समझें कि अमेरिका की सड़कों पर सोना बिछा हुआ है। वे उन पर इतनी श्रद्धा न करें क्योंकि अमेरिका के लोग अब नर्कोन्मुख हैं।

श्री माता जी ने बताया कि अमेरिकन लोग तो ईसा की बातों पर भी ध्यान नहीं करते, ईसा ने इतनी सूक्ष्म बात कही, जब उन्होंने कहा कि ''आप की दृष्टि भी अपवित्र नहीं होनी चाहिए''। आज वहां एक व्यक्ति भी ऐसा नहीं है जो इस कसौटी पर खरा उतरे।

कन्फ्यूशियस और लाओत्से के बारे बात करते हुए श्री माता जी ने कहा कि इन सब गुरुओं ने समय के अनुकूल

भाषा में लोगों से बात की। कन्फ्यूशियस मानवता की शिक्षा देने को आए, लाओत्से ने 'ताओ' की बात की, जो कि कुण्डलिनी के अतिरिक्त कुछ भी नहीं। येन्गत्से नदी से नाव द्वारा जाते हुए श्री माता जी ने लाओत्से को स्मरण किया कि किस प्रकार उन्होंने इस नदी का वर्णन 'ताओ' के रूप में किया था। यह नदी दोनों छोरों से इतनी सुन्दर है कि चीनी चित्र कला की सारी प्रेरणा वहीं से आती है। लाओत्से ने अपनी कविता में 'ताओ' (कुण्डलिनी' का वर्णन करते हुए कहा कि बहुत सी सुन्दर घटनाएं घटित होने वाली हैं परन्तु व्यक्ति को निर्लिप्त भाव से, साक्षी बनकर, चलते रहना होगा। समुद्र के निकट जब यह नदी (ताओ) पहुँचती है तो यह शान्त हो जाती है और इस शान्त अवस्था में सागर में प्रवेश करती है।

श्री माता जी ने कहा कि जापान की ज़ैन प्रणाली भी महान है; पर आज जापान के लोग विनाश की ओर बढ़ रहे हैं। सहज योग के चार्ट पर उन्होंने जापान को दायां हृदय बताया।

हृदय चक्र के बारे बताते हुए श्री माता जी ने कहा कि मध्य हृदय चक्र सुरक्षा की दाता, जगत जननी जगदम्बा से आर्शीवादित है। उन्होंने वर्णन किया कि किस प्रकार बारह वर्ष की आयु तक बच्चे में रोग प्रति कारक उत्पन्न होते हैं। बाद में ये रोग प्रतिकारक पूरे शरीर में फैल जाते हैं परन्तु दूरस्थ नियन्त्रण (रिमोट कन्ट्रोल) यहीं (हृदय में) स्थित होता है। इस स्तर पर मनुष्य दो प्रकार के अपराध करता है – पिता के विरोध में तथा माता के विरोध में। पिता पर अविश्वास, उसे चुनौती देना, उग्र तथा अत्याचारी होना, पिता के खिलाफ अपराध हैं। चरित्र हीनता माता के विरुद्ध अपराध है। सारे मनोदैहिक रोगों का मुकाबला गण करते है जो कि रोग प्रतिकारकों के रूप में होते हैं। स्त्रियों के मातृत्व को यदि चरित्रहीन पति या बांझपने के कारण चुनौती मिले तो स्त्रियों को स्तन कैंसर हो सकता है। अमेरिका में स्त्रियों में सुरक्षा भावना की कमी के कारण स्तन कैंसर की घटनाएं बहुत अधिक हैं।

विज्ञान के सम्मुख जो समस्याएं हैं उनके विषय में श्री माता जी ने कहा कि यह बहुत ही एक तरफा है। विज्ञान ने भौतिकता के क्षेत्र में बहुत से अविष्कार किए हैं, परन्तु यह सारी समस्याओं का समाधान नहीं कर सकता। यह ऐसे प्रश्नों का उत्तर देने में असमर्थ है जैसे "हम पृथ्वी पर क्यों जन्में"। पूर्णत्व की तस्वीर विज्ञान नहीं दे सकता। श्री माता जी ने महसूस किया कि विज्ञान की सबसे बड़ी बुराई यह है कि यह चरित्रहीन है। वैज्ञानिक जब तक चरित्रवान नहीं हो जाते तब तक एटम-बम आविष्कृत होते ही रहेंगे।

शरीर तन्त्र चार्ट पर श्री माता जी ने बताया कि किस प्रकार दोनों नाड़ियों के छोरो पर अंह एंव प्रति अहं के गुब्बारे सम आकार की रचना होती है। उन्होंने बताया कि इस अंह के कारण केवल मनुष्यों में कर्ताभाव आ जाता है। अतः केवल मनुष्यों के साथ ही "कर्म" की समस्या है। पशु पाश में बंधे होते हैं और उन्हें कर्म की समस्या नहीं होती। उन्होंने विस्तार पूर्वक बताया कि किस प्रकार श्री बुद्ध (मात्रेय), जो कि सेंट गैबरीफ हैं, वे अहं के स्थान पर विराजमान हैं तथा श्री महावीर, जो कि सेंट माइकल है, वेप्रति अहं के स्थान पर विराजित हैं।

कुण्डलिनी जब उठती है तो अगन्य चक्र पर ईसा को जागृत करती है और परिणाम स्वरूप यह दोनों गुब्बारे (अहँ एवं प्रति अहँ) नीचे की ओर खिंच जाते हैं। अहँ जब समाप्त हो जाता है तो कर्म (कर्म-फल) भी नहीं रहते। "ईसा की हमारे पापों के लिए मृत्यु" का यही अर्थ है। श्री माता जी ने जोर देकर कहा कि ईसा का सन्देश पुनर्जन्म है क्रॉस नहीं। पुर्नजीवित होकर ईसा ने दर्शाया कि सभी लोग पुर्नजन्म ले सकते हैं।

श्री राम की बात करते हुए श्री माता जी ने कहा कि वे सक्रान्त वर्णित हितैषी राजा थे। अपने प्रजाजनों की भावनाओं का वे इतना सम्मान करते थे कि उन्होंने अपनी पत्नी सीता को त्याग दिया क्योंकि जब रावण उन्हें चुराकर ले गया था तो उन्हें लंका में रहना पड़ा। आश्रम में जन्में श्री राम जी के जुड़वां पुत्र लव और कुश के बारे में श्री माता जी ने बताया। छः हजार वर्ष पूर्व लव रूस के कासाकस पर्वतों पर आये और आज उनके वंशज स्लाव कहलाते हैं। कुश चीन चले गये और आज उनके वंशज कुशाण कहलाते हैं। भारतीय भाषा में चीन के लोगों को कुशाण कहते हैं। श्री माता जी ने तब विनोद पूर्वक कहा कि रूस और चीन के लोग जुड़वें भाइयों की तरह हैं।